04 - संयुक्त राष्ट्र का अमृत पथ गढ़ेंगी एनालेना

05 - दूरगामी सोच का परिणाम है वंदे गंगा जन अभियान

06 - शहर से प्रतिदिन निकलने वाले कचरे का वैज्ञानिक पद्धति से होगा...

07 - समिट में मिलेंगे निवेश के व्यापक अवसर

A Daily News Magazine

भोपाल

शनिवार, 7 जून, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 268, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

डोनाल्ड ट्रंप और एलन मस्क एक-दूसरे को क्यों दे रहे हैं धमकियां?

एंथनी जर्चर

दुनिया के सबसे अमीर शख़्स एलन मस्क और सबसे ताक़तवर नेता डोनाल्ड ट्रंप के बीच गहरा टकराव हो, तो क्या होता है? पूरी दुनिया अब ये देख रही है और ये कोई अच्छी तस्वीर नहीं है। डोनाल्ड ट्रंप और एलन मस्क के पास सबसे बड़े मेगाफ़ोन हैं और दोनों ने इन्हें एक दूसरे की ओर तान दिए हैं। दोनों के बीच की असहमति अब पूरी तरह ज़ुबानी जंग में तब्दील हो गई है। ट्रंप ने संघीय सरकार के साथ बड़े पैमाने पर होने वाले एलन मस्क के कारोबारी सौदों को लेकर धमकी दी है। ये सौदे उनके स्पेसएक्स कार्यक्रमों की लाइफ़लाइन हैं।

ट्रंप ने अपनी सोशल मीडिया वेबसाइट पर धमकी देते हुए लिखा, 'अगर बजट में बचत करनी है तो इसका सबसे आसान तरीक़ा है एलन मस्क को मिलने वाली अरबों डॉलर की सब्सिडी और कॉन्ट्रैक्ट ख़त्म कर दिए जाएं।'

अगर ट्रंप ने सरकारी मशीनरी को मस्क के खिलाफ़ कर दिया तो तकनीकी कंपनियों के अरबपति मालिक मस्क के लिए ये भारी पड़ सकता है। फ़िलहाल तो ट्रंप और मस्क के झगड़े के बाद मस्क की कंपनी टेस्ला के शेयर गुरुवार को 14 फ़ीसदी तक गिर गए। हालांकि ये जुबानी जंग एकतरफ़ा नहीं थी। ट्रंप के हमले के बाद मस्क ने ट्रंप के खिलाफ़ महाभियोग लाने की मांग की। मस्क ने कहा कि ट्रंप उनकी कंपनियों की फंडिंग घटाकर तो देखें। उन्होंने कहा कि वो अपने ड्रैगन अंतरिक्ष यान का काम ख़त्म करने की प्रक्रिया भी तेज़ कर रहे हैं।

इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन तक अंतरिक्ष यात्रियों और ज़रूरत की सप्लाई ले जाने के लिए अमेरिका इस स्पेसक्राफ़्ट पर निर्भर है। ट्रंप के खिलाफ़ वार करने के लिए मस्क के पास असीमित संसाधन हैं। इनमें अगले साल होने वाले चुनावों और प्राइमरी में रिपब्लिकन पार्टी के विद्रोही उम्मीदवारों को फंड करने जैसे विकल्प शामिल हैं। गुरुवार की दोपहर को उन्होंने कहा कि वो 'सचमुच एक बड़ा बम गिरा रहे हैं।' मस्क ने बग़ैर सबूत दिए दावा किया कि ट्रंप का नाम यौन अपराधी जैफ़री एपस्टीन (एपस्टीन की अब मौत हो चुकी है) से जुड़ी फ़ाइल में है। वहीं राष्ट्रपति ट्रंप की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने मस्क के आरोपों पर हल्की प्रतिक्रिया दी है। एलन मस्क भले ही ट्रंप सरकार से लड़ाई न जीत पाएं, लेकिन वो ट्रंप और रिपब्लिकन्स से एक बड़ी राजनीतिक और निजी क़ीमत वसूल सकते हैं। ट्रंप को शायद इसका एहसास था इसलिए उन्होंने दिन ख़त्म होने तक इस गर्मागर्मी को कम करने की और व्हाइट हाउस के पुलिस एप्रिसिएशन प्रोग्राम में मस्क की सार्वजनिक मौजूदगी के दौरान उन पर कोई टिप्पणी करने से परहेज किया। हालांकि ट्रुथ सोशल पर एक पोस्ट में उन्होंने लिखा कि उन्हें उनके ख़िलाफ़ (मस्क) जाने से कोई गुरेज़ नहीं है। अच्छा होता कि मस्क महीनों पहले ही सरकारी सेवा छोड़ देते। इसके बाद उन्होंने अपने 'बिग ब्यूटीफ़ुल' टैक्स व्यय क़ानून को बढ़ावा देने की की बात की।

हालांकि गुरुवार को दोनों के बीच घमासान के बाद इस तनाव के कम होने के आसार मुश्किल ही लग रहे हैं। ये टकराव पिछले सप्ताह धीरे-धीरे शुरू हुआ और फिर बुधवार को इसमें उबाल दिखना शुरू हुआ। फिर गुरुवार की दोपहर ओवल ऑफ़िस में पूरी दुनिया को ये टकराव दिखा। जर्मनी के नए चांसलर फ़्रिड्रिख़ मर्ज़ उस दिन ओवल ऑफिस आए हुए थे। उनकी स्थिति अजीब थी और वो इस प्रकरण के बीच दिन भर चुप्पी साधे बैठे रहे। राष्ट्रपति एक ठुकराए हुए प्रेमी की तरह लग रहे थे।

ट्रंप ने मस्क की ओर से की गई अपने क़ानूनों की आलोचना पर आश्चर्य जताया। उन्होंने इस धारणा को कमज़ोर करने की कोशिश की कि मस्क से करोड़ों डॉलर न मिले होते तो वो राष्ट्रपति चुनाव हार जाते। उन्होंने कहा कि मस्क ने अपने सुर अब इसलिए बदल लिए हैं क्योंकि इलेक्ट्रिक वाहनों पर टैक्स क्रेडिट ख़त्म करने की रिपब्लिकन पार्टी की कोशिश से उनकी कार कंपनी टेस्ला को नुक़सान होगा।

मस्क ने अपने सोशल मीडिया साइट एक्स पर अपने 22 करोड़ फॉलोअर्स के लिए जेनरेशन एक्स के अंदाज में लिखा, 'जो हो।' उन्हें कार सब्सिडी की परवाह नहीं है, वे देश पर चढ़े कर्ज़ को कम करना चाहते थे। ये देश के अस्तित्व के लिए ख़तरा है। उन्होंने इस बात ज़ोर दिया कि अगर उन्होंने पिछले चुनाव में ट्रंप का साथ नहीं दिया होता तो डेमोक्रेट्स जीत जाते। उन्होंने ट्रंप से कहा- 'ऐसी कृतघ्नता।' मस्क और ट्रंप ने एक साथ आकर, एक ताक़तवर लेकिन असंभावित गठजोड़ बनाया था। मस्क को ट्रंप प्रशासन में बजट में कटौती करने वाले विभाग के प्रमुख के पद पर रखा गया था। बजट में कटौती करने वाला ये विभाग, डिपार्टमेंट ऑफ़ गवर्नमेंट एफ़िशिएंसी ट्रंप प्रशासन के सौ दिनों की सबसे बड़ी कहानी बन गया। क्योंकि इसने कई एजेंसियों को हिला कर रख दिया था। इससे सैकड़ों सरकारी नौकरियां चली गईं। हालांकि ये ज़्यादा दिनों की बात नहीं है, जब ये अटकलें लगाई जाने लगीं कि ये दोनों बड़ी शख़्सियतें कब और कैसे टकराएंगी और एक दूसरे से अलग होंगी। कुछ समय के लिए ऐसा लगा कि ये भविष्यवाणियां ग़लत थीं। क्योंकि मस्क की लोकप्रियता गिरने के बावजूद ट्रंप उनके साथ खड़े रहे।

ट्रंप प्रशासन के अधिकारियों के साथ मस्क का टकराव होता रहा और इस साल की शुरुआत में वो कई चुनावों में बोझ बन गए। जब पिछले सप्ताह मस्क ने 'विशेष सरकारी कर्मचारी' के तौर पर अपना 130 दिनों का कार्यकाल पूरा किया तो उन्हें ओवल ऑफ़िस में एक शानदार विदाई दी गई। इसमें उन्हें व्हाइट हाउस की एक सुनहरी चाबी दी गई। ये इस बात का संकेत था कि मस्क की किसी भी दिन व्हाइट हाउस में वापसी हो सकती है।

हालांकि ये कहना सेफ़ होगा कि ऐसा कोई भी न्योता अब ख़त्म कर दिया गया है और व्हाइट हाउस के ताले भी बदल दिए गए होंगे। इस बीच दोनों के बीच चल रहे टकराव को देख रहे डेमोक्रेट सांसद अभी तक ये तय नहीं कर पा रहे हैं कि कैसे प्रतिक्रिया दें। डेमोक्रेटिक रणनीतिकार लियाम केर ने 'पॉलिटिको' को बताया, 'ये फ़ायदे-नुक़सान का खेल है। वो जो भी करेंगे उससे डेमोक्रेट्स का फ़ायदा होगा, लेकिन रिपब्लिकन्स का नुक़सान होगा।' लेकिन ये उम्मीद नहीं की जानी चाहिए कि ये टकराव जल्दी ख़त्म होगा। इसका इशारा मस्क के ही एक ट्वीट से मिलता है। उन्होंने लिखा है, 'राष्ट्रपति के तौर पर ट्रंप के पास साढ़े तीन साल हैं, लेकिन मेरे पास अभी 40 से अधिक साल हैं।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

जल गंगा संवर्धन अभियान

श्री चिंतामण गणेश के आशीर्वाद से

देश-प्रदेश विकास की नई ऊंचाईयाँ छू रहा है : सीएम

भोपाल (नप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जल गंगा संवर्धन अभियान में श्री चिंतामण गणेश मंदिर परिसर स्थित लक्ष्मण बावड़ी से बावड़ी उत्सव में शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'बूंद सहेजे बावड़ी' पुस्तक का विमोचन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 'एक पेड़ मां के नाम अभियान' में चिंतामण गणेश मंदिर परिसर में सिंदूर के पौधे का रोपण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्री चिंतामण गणेश के आशीर्वाद से देश-प्रदेश विकास की नई ऊंचाईयाँ छू रहा है। उज्जैन में आयोजित की गई वेलनेस समिट में हजारों करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। उज्जैन देश-विदेश के लिए मानसिक शांति, आध्यात्म, वेलनेस केयर का महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा।

- मुख्यमंत्री बावड़ी उत्सव में चिंतामण गणेश मंदिर परिसर स्थित लक्ष्मण बावड़ी से सम्मिलित हुए

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सिंहस्थ-2028 दृष्टिगत श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए उज्जैन-इंदौर नवीन फोरलेन पर भी कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि चिंतामण गणेश रेलवे स्टेशन का उन्नयन भी किया जाएगा। मां क्षिप्रा को कान्ह क्लोज़ डक्ट परियोजना और सेवारखेड़ी सिलारखेड़ी परियोजना से स्वच्छ, निर्मल और प्रवाहमान किया जा रहा है।

बावड़ी-उत्सव

जन अभियान परिषद द्वारा बताया गया कि बावड़ी उत्सव में बावड़ियों के स्थल की जन सहभागिता से जीर्णोद्धार, प्रकाश, साफ सफाई, साज-सज्जा, जल आने के मार्गो को खोलकर जल संरचनाओं को नव जीवन प्रदान किया जा रहा है। जीर्णोद्धार के बाद बावड़ी उत्सव अंतर्गत बावड़ी का परंपरागत पूजन भी किया जा रहा है और जलस्त्रोत संरक्षण केन्द्रित संदेश अथवा बावड़ी के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक महत्व के बारे में जानकारी देकर, जल संचय का संदेश दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में संपूर्ण अभियान में परिषद के प्रयासों से 36 लाख 34 हजार से अधिक लोगों की सहभागिता सुनिश्चित हुई है। परिषद् द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान में 2139 बावड़ी सफाई, 4254 तालाब सफाई, 3468 नदी घाट सफाई,15913 जल संगोष्ठी,1677 नुक्कड़ नाटक, दीवार लेखन के कार्य किए गए है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने बावड़ी उत्सव में लक्ष्मण बावड़ी का पूजन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री पीयूष त्रिपाठी ने किया और आभार संभाग समन्वयक श्री शिवप्रसाद मालवीय ने किया। कार्यक्रम में सांसद श्री अनिल फिरोजिया, जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर, विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, जनप्रतिनिधि श्री संजय अग्रवाल, श्री रवि सोलंकी, चिंतामण गणेश मंदिर प्रशासक श्री अभिषेक शर्मा, पुजारी श्री राजेश गुरु, जनअभियान परिषद के कार्यपालक निर्देशक डॉ बकुल लाड़,सदस्य श्रीमती अजीता परमार,जिला समन्वयक श्री देवेंद्र शर्मा और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुलिस लाइन उज्जैन में कई कार्यों का किया लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पुलिस लाइन उज्जैन स्थित सेल्फ स्टडी जोन, दिशा लर्निंग सेंटर, पार्क और ओपन जिम का लोकार्पण किया। इस अवसर पर पुलिस बैंड द्वारा मुख्यमंत्री डॉ. यादव को सलामी दी गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पार्क में सांकेतिक रूप से एक्सरसाइज कर सभी को नियमित व्यायाम कर स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया इस अवसर पर विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा,नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, जनप्रतिनिधि श्री संजय अग्रवाल, श्री रवि सोलंकी आदि उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा महापुराण मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुक्रवार को उज्जैन में क्षिप्रा तट पर झलारिया मठ में श्रीमद् विश्वकर्मा महापुराण कथा में सहभागिता की।

सुप्रभात

दरबदर जो थे वो दीवारों के मालिक हो गये
मेरे सब दरबान, दरबारों के मालिक हो गये
लफ़्ज़ गूँगे हो चुके, तहरीर अंधी हो चुकी
जितने मुख़बिर थे वे अख़बारों
के मालिक हो गये
लाल सूरज आसमां से घर की
छत पर आ गया
जितने थे बेकार सब कारों के
मालिक हो गये
और अपने घर में हम बैठे रहे
मशअल बकफ़
चन्द जुगनू चांद और तारों के
मालिक हो गये
देखते ही देखते कितनी दुकानें खुल गईं
बिकने जो आए थे बाज़ारों के
मालिक हो गये
सर बकफ़ थे तो सरों से हाथ धोना पड़ गया
सर झुकाए थे वो दस्तारों के मालिक हो गये।

- राहत इंदौरी

आ गई खुशखबरी!

आरबीआई ने दिया तोहफा

- लगातार तीसरी बार घटाया रेपो रेट, 0.5 प्रतिशत की कटौती

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक बार फिर देश के केंद्रीय बैंक रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने रेपो रेट में कटौती कर दी है। उम्मीद के मुताबिक, आरबीआई ने 4 जून से शुरू हुई एमपीसी मीटिंग का फैसला आज (6 जून 2025) सुनाया।

आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने द्विमासिक मौद्रिक नीति समीक्षा पेश करते हुए कहा कि वैश्विक स्थिति नाजुक, विभिन्न देशों में आर्थिक परिदृश्य कमजोर बना हुआ है। वैश्विक स्तर पर कमजोर आर्थिक परिदृश्य के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनी हुई है। आरबीआई ने प्रमुख नीतिगत दर रेपो को 0.50 प्रतिशत घटाकर 5.50 प्रतिशत किया। आरबीआई एमपीसी कमेटी की बैठक के तीसरे दिन फैसला सुनाते हुए आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था निवेशकों के लिए अपार अवसर प्रदान करती है। महंगाई दर में नरमी के बीच भारतीय रिजर्व बैंक ने घरेलू अर्थव्यवस्था को गति देने के मकसद से प्रमुख नीतिगत दर रेपो को 0.5 प्रतिशत घटाकर 5.5 प्रतिशत कर दिया है।

आतंकवाद पर प्रहार

दिल्ली में शुरू हुई चौथी भारत-मध्य एशिया वार्ता

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्री (ईएएम) एस. जयशंकर ने शुक्रवार को नई दिल्ली में चौथी भारत-मध्य एशिया वार्ता के लिए कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान, किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान के विदेश मंत्रियों का स्वागत किया। इस बैठक में

आतंकवाद का मुद्दा जोर-शोर से उठा। विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा कि भारत पूरे क्षेत्र में आतंकवाद विरोधी और कट्टरपंथ विरोधी साझेदारी को बढ़ाने में मजबूती से आगे बढ़ रहा है। हम आतंकवाद को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसके अलावा व्यापार, कनेक्टिविटी पर भी चर्चा हुई।

पाकिस्तान ने इंसानियत और कश्मीरियत पर किया हमला

पीएम मोदी ने कहा-हमने उसकी जमीन पर कयामत बरसा दी

प्रधानमंत्री ने तिरंगा दिखाकर किया चिनाब ब्रिज का उद्घाटन

श्रीनगर (एजेंसी)। पीएम मोदी पहलगाम हमले के बाद पहली बार जम्मू-कश्मीर पहुंचे थे। उन्होंने यहां के रियासी जिले में चिनाब नदी पर बने दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे आर्च ब्रिज का तिरंगा दिखाकर उद्घाटन किया। इसके बाद अंजी ब्रिज और कटरा में कश्मीर की पहली ट्रेन वंदे भारत को हरी झंडी दिखाई। मोदी ने कटरा में 42 मिनट का भाषण दिया। इसमें आतंकवाद, पाकिस्तान और टूरिज्म का जिक्र किया। पीएम ने कहा, दुर्भाग्य से हमारे पड़ोस का देश, मानवता का विरोधी, मेलजोल का विरोधी है। वह ऐसा देश है जो गरीब की रोजी-रोटी का भी विरोधी है। 22 अप्रैल को पहलगाम में जो हुआ, वह इसी का उदाहरण है। पाकिस्तान ने इंसानियत और कश्मीरियत पर हमला किया। हमने 6 मई को उस पर कयामत बरसा दी। 22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकवादियों के हमले का मकसद कश्मीर के मेहनतकश लोगों की कमाई को रोकना था, इसलिए टूरिस्ट पर हमला किया। वो टूरिज्म जो लगातार बढ़ रहा था, यहां रिकॉर्ड संख्या में टूरिस्ट आ रहे थे, जिसने जम्मू-कश्मीर के लोगों के घर चलते हैं, पाकिस्तान ने उन्हें निशाना बनाया। पाकिस्तान की साजिश इन सबको तबाह करने की थी। सरकार के अनेक प्रयासों से 11 साल में 25 करोड से ज्यादा गरीबों ने गरीबी को परास्त कर इससे बाहर निकल गए। अब वे मध्यम वर्ग का हिस्सा हैं। जो लोग अपने आप को समाज व्यवस्था के एक्सपर्ट मानते हैं, जो लोग अगड़े-पिछड़े की राजनीति में डूबे रहते हैं, जो दलितों के नाम पर रोटियां सेकते हैं, जो योजनाएं मैंने बताई है, वे कौन लोग हैं, जिन्हें सुविधाएं मिलीं। ये मेरे दलित, आदिवासी, पिछड़े, झुग्गियों में रहने वाले भाई-बहन है। केंद्र का प्रयास है कि गरीबों-मध्यम वर्ग को ज्यादा से ज्यादा ताकत दें।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 7 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

रूठ गए बदरा, अटक गया मानसून, बारिश में देरी!

● बंगाल की खाड़ी में नहीं बन पा रहा है कोई सिस्टम ● मौसम विभाग ने बताई मॉनसून में देर होने की वजह

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून में देरी क्यों हो रही है, इसे लेकर अब भारतीय मौसम विभाग ने ताजा अपडेट दिया है। मौसम विभाग के मुताबिक बंगाल की खाड़ी में कोई सिस्टम नहीं बन पा रहा है, इस वजह से मॉनसून के आने में देरी हो रही है। मॉनसून में देरी की वजह से किसानों की खेती पर असर देखा जा रहा है। भारतीय मौसम विभाग ने कहा है कि दक्षिण-पश्चिम मॉनसून 12 से 18 जून के बीच शुरू हो सकता है। आईएमडी के एक अधिकारी ने बताया कि 12-13 जून को बंगाल की खाड़ी में एक सिस्टम बन सकता है। हालांकि, अलग-अलग मॉडल के कारण अभी भी कुछ अनिश्चितताएं भी हैं। अधिकारी ने कहा कि कुछ मॉडल सिस्टम बनने की बात कह रहे हैं, तो कुछ नहीं। आईएमडी

को उम्मीद है कि मॉनसून के फिर से शुरू होने के बाद मध्य भारत, महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों और दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत (जहां मानसून पहले ही पहुंच चुका है) में अच्छी बारिश होगी। आईएमडी का कहना है कि मॉनसून की प्रगति के लिए बारिश का वितरण बहुत जरूरी है। मॉनसून की सुस्त चाल के कारण सूखे का सामना कर रहे क्षेत्रों के लिए यह पूर्वानुमान एक उम्मीद की किरण लेकर आया है। आईएमडी के अधिकारी के मुताबिक पश्चिमी हवाओं के मजबूत होने और पश्चिमी तट पर एक ऑफ-शोर ट्रफ के बनने की संभावना के कारण दक्षिण प्रायद्वीपीय और आसपास के मध्य भारत के कई हिस्सों में अलग-अलग स्थानों पर भारी बारिश के साथ व्यापक से लेकर बहुत व्यापक बारिश होने की संभावना है। हालांकि, निजी मौसम पूर्वानुमान एजेंसी स्काईमेट वेदर सर्विसेज ने बंगाल की खाड़ी में मॉनसून सिस्टम बनने की अधिक संभावना जताई है।

बिहार की अब नई परिभाषा क्राइम कैपिटल ऑफ इंडिया

● राहुल बोले-नालंदा में पूरी दुनिया से लोग आते थे, आज रोजगार के लिए यहां से जाते हैं

नालंदा (एजेंसी)। राहुल गांधी राजगीर के इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में अति पिछड़ा समाज को संबोधित कर रहे हैं। उन्होंने कहा- बिहार को सत्य, न्याय और

अहिंसा की जमीन कह सकते हैं। बिहार की नई डेफिनेशन क्राइम कैपिटल ऑफ इंडिया। कहां से कहां पहुंच गए आप, शुरुआत कहां हुई और कहां पहुंच गए। पहले नालंदा में पूरी दुनिया से लोग आते थे। आज यहां से लोग रोजगार के लिए पूरी दुनिया में जाते हैं। मैं राजनीति में 2004 में आया। मेरे दादा ने डिस्कवरी ऑफ इंडिया लिखी और मुझे भी डिस्कवरी ऑफ इंडिया दिखने लगी। यहां देखा 90 प्रतिशत आबादी की हिस्सेदारी नहीं है। 500 कंपनियां है, उसको हजारों करोड़ों रुपए मिलते हैं। नियम-कानून में बदलाव कर दे दिया जाता है। आप एक भी दलित-पिछड़ा का नाम बता दीजिए। एक मैनेजमेंट में बैठे लोगों का नाम बताइए। इससे पहले वे माउंटेन मैन दशरथ मांझी के गांव गहलौर पहुंचे। यहां उन्होंने दशरथ मांझी की मूर्ति पर माल्यार्पण किया। दशरथ मांझी के बेटे भगीरथ मांझी से मुलाकात की। भगीरथ मांझी का हाथ पकड़कर राहुल गांधी चलते दिखे। दशरथ मांझी के बेटे भागीरथ मांझी ने राहुल गांधी से कहा- मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। दशरथ मांझी ने राहुल गांधी से जिले के बोधगया विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने की भी इच्छा जताई।

प्रदेश जनजातीय संग्रहालय भोपाल में मधुआ महोत्सव शुरू

12वीं वर्षगांठ पर पारंपरिक संस्कृति, कला और खाने का दिखा संगम

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय में शुक्रवार से मधुआ महोत्सव की शुरुआत हो गई। इस महोत्सव का आयोजन संग्रहालय के 12वें स्थापना दिवस के अवसर पर किया है, जो 10 जून तक चलेगा, जिसमें जनजातीय जीवनशैली की कई झलक देखने को मिलेगी। महोत्सव में कई प्रकार के जनजाति व्यंजन के स्टॉल लगे।

पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद

महोत्सव में जनजातीय व्यंजनों के स्टॉल भी लोगों को खूब आकर्षित कर रहे हैं। वेजंती ने बताया कि उन्होंने महुए की पूड़ी, बाजरा और ज्वार की रोटी बनाई है जो बहुत पोषक और स्वादिष्ट हैं। झाबुआ की रहने अनीता ने सिलबट्टे पर पिसी हुई कई तरह की चटनियां बनाई हैं। उन्होंने लहसुन-प्याज न खाने वालों के लिए अलग चटनियों की व्यवस्था की है। सिलबट्टे पर पिसी हुई कई तरह की

चटनियां लोगों को बेहद पसंद आ रही है।

अभिनाश ने भील जनजाति के व्यंजनों की जानकारी दी, जिनमें रागी, मक्का, ज्वार के लड्डू और कुटकी की खीर शामिल हैं। ये स्वास्थ्यवर्धक और स्वादिष्ट हैं।

शोभा श्रीवास्तव ने झाबुआ की खास कढ़ी, मठा भिंडी और ज्वार-मक्का की रोटियां तैयार की हैं, जो स्वाद के साथ पोषण से भरपूर हैं। कोदो का डोसा स्वादिष्ट होने का साथ बेहद पोष्टिक है।

पारंपरिक सामानों की प्रदर्शनी लगी

7 से 10 जून तक आदिवासी कलाकारों के तैयार की गई पारंपरिक कलाओं की प्रदर्शनी और बिक्री की जा रही है। इसमें पेंटिंग, मूर्तिकला, बेल मेटल (धातु कला), बांस शिल्प, लाख शिल्प, पारंपरिक वाद्य यंत्र शामिल है। इसके अलावा लकड़ी की सजावटी वस्तुएं, मिट्टी के बर्तन, हथियार, जेवर और कपड़ों के स्टॉल भी लगे हैं।

उद्घाटन समारोह में 'मदिया नायक' पर नृत्य-नाटक

महोत्सव की शुरुआत 6 जून को छत्तीसगढ़ (दंतेवाड़ा) के प्रसिद्ध जननायक 'मदिया नायक' पर आधारित नृत्य-नाटक से हुई है। यह प्रस्तुति लोक कला एवं सांस्कृतिक संस्था 'रंगश्री', दुर्ग दे रहा है।

7 से 9 जून तक हर शाम को भारत के विभिन्न राज्यों के लोकनृत्य प्रस्तुत किए जाएंगे। इसमें मणिपुर, पंजाब, महाराष्ट्र, राजस्थान समेत कई राज्यों की रंग-बिरंगी लोक संस्कृति देखने को मिलेगी। महोत्सव में एंट्री निःशुल्क है।

इसी महीने से शुरू होगा इंदौर-दाहोद रेल लाइन के लिए टनल में पटरी बिछाने का काम

इंदौर (नप्र)। इंदौर-दाहोद नई रेल लाइन प्रोजेक्ट में पिछले तीन वर्षों से युद्ध स्तर पर काम चल रहा है। 204 किमी लंबे इस प्रोजेक्ट को अलग-अलग सेक्शन में पूरा किया जा रहा है। इंदौर-टीही सेक्शन पर रेल कनेक्टिविटी होने के बाद अब टीही से धार सेक्शन का काम चल रहा है।

इस सेक्शन में 270 करोड़ की लागत से बन रही 2.9 किमी लंबी टनल की फिनिशिंग का काम जारी है। टीही-धार सेक्शन में 46 किमी के हिस्से में रेल लाइन बिछाने, अर्थवर्क, स्टेशन भवन, आरओबी, अंडरपास आदि काम तेजी से किए जा रहे हैं।

टनल की फाइनल फिनिशिंग जारी

रेलवे ने टनल का काम सितंबर तक पूरा करने का लक्ष्य रखा है, ताकि दिसंबर तक इंदौर-धार के बीच ट्रेन संचालन शुरू हो सके। टनल बनने के बाद अब फाइनल फिनिशिंग की जा रही है। अब तक 800 मीटर में लाइनिंग का काम पूरा किया जा चुका है।

एक माह से एक साथ पांच मशीनें काम कर रही हैं। पानी का रिसाव रोकने के लिए जेंट्री के माध्यम से वाटरप्रूफ जियो टेक्सटाइल और मेमरीन लगाई जा रही है। इसके बाद भी पानी का रिसाव होने की स्थिति में ड्रेन लाइन भी बनाई गई है। रेलवे अफसरों के अनुसार इसी माह सुरंग के आधे हिस्से में ट्रैक बिछाने काम भी शुरू कर दिया जाएगा।

आरसीबी ऑफीसर एयरपोर्ट से गिरफ्तार, भागने की फिराक में था

● बेंगलुरु भगदड़ मामले में कर्नाटक सरकार ने लिया है बड़ा ऐक्शन
● इवेंट कंपनी के 3 अधिकारी भी हिरासत में, पूछताछ हो गई है शुरू

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु भगदड़ मामले में पुलिस ने आरसीबी के सीनियर मार्केटिंग ऑफीसर निखिल सोसाले को एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया है। निखिल मुंबई भागने की तैयारी में था। वहीं, क्यूब्बन पार्क थाना पुलिस ने इवेंट मैनेजमेंट कंपनी एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के 3 अधिकारियों को भी हिरासत में लिया है। इन अधिकारियों की पहचान किरण, सुमंथ और सुनील मैथ्यू के रूप में हुई है। क्यूब्बन पार्क थाने में अधिकारी प्रकाश

इनसे पूछताछ कर रहे हैं। कर्नाटक स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन के दो अधिकारी- सचिव शंकर और कोषाध्यक्ष जयराम फरार हैं। पुलिस ने बताया कि ये दोनों अपने घरों पर नहीं मिले और उन्हें पकड़ने की कोशिशें जारी हैं। कर्नाटक क्रिकेट बोर्ड ने अपने खिलाफ दर्ज एफआईआर को रद्द कराने के लिए हाईकोर्ट में रिट याचिका दायर की है। इससे पहले सीएम सिद्धारमैया ने पुलिस कमिश्नर बी दयानंद समेत 8 अफसरों को सस्पेंड किया था।

इंडिया गठबंधन से कांग्रेस होगी आउट! थर्ड फ्रंट की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता आतिशी ने विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक की प्रासंगिकता पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि गैर-कांग्रेस और गैर-बीजेपी दलों को अब थर्ड फ्रंट बनाने के बारे में सोचना चाहिए। आप नेता का आरोप है कि कांग्रेस ने बीजेपी के साथ अघोषित गठबंधन कर लिया है, इसलिए नेशनल हेराल्ड मामले के आरोपी और रॉबर्ट वाड्रा जैसे लोग जेल नहीं जा रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर के बाद कांग्रेस मोदी सरकार पर लगातार हमलावर बनी हुई है। वह इस मसले पर संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग कर रही थी। इसको लेकर हाल ही में इंडिया गठबंधन की एक बैठक भी हुई थी, लेकिन आप के नेता उसमें शामिल नहीं हुए।

58,000 सशस्त्र जवान जैमर और ड्रोन भी तैनात

● पहली बार हाईटेक सुरक्षा में 38 दिनों की होगी अमरनाथ यात्रा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकवादी हमले के बाद सरकार अमरनाथ यात्रा की सुरक्षा बढ़ाने पर विचार कर रही है। उच्च पदस्थ सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि पहली बार अमरनाथ यात्रा के रूट पर जैमर और ड्रोन की तैनाती करने का फैसला किया गया है। इसके अलावा करीब 58,000 केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ)के जवान अमरनाथ यात्रा रूट पर तीर्थयात्रियों की सुरक्षा करेंगे। पवित्र गुफा मंदिर और बाबा बर्फानी के दर्शन के लिए इस बार अमरनाथ यात्रा को छोटा कर 38 दिवसीय कराने का फैसला किया गया है। एजेंसी के मुताबिक, इस 38 दिवसीय तीर्थयात्रा के दौरान अमरनाथ यात्रा की सुरक्षा के लिए 581 केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) कंपनियां, जैमर और ड्रोन की भारी तैनाती की जाएगी। एक कंपनी में करीब 100 से 124 स्टाफ होते हैं।

नागपुर में आरएसएस ने किया राफेल फाइटर जेट का सम्मान

● स्वयं सेवकों ने बनाया भारतीय युद्धक विमान का फॉर्मेशन

नागपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा नागपुर में आयोजित किए गए वर्ग के समापन समारोह के दौरान स्वयं सेवकों ने राफेल फार्मेशन का निर्माण करके भारतीय युद्धक विमान को सम्मानित किया। इस फॉर्मेशन को बनाने के दौरान मंच पर मुख्य सरसंघचालक मोहन भागवत समेत तमाम वरिष्ठ पदाधिकारी मौजूद थे। आपको बता दें ऑपरेशन सिंदूर के दौरान फ्रांस में निर्मित राफेल

विमानों ने अपनी ताकत का प्रदर्शन किया था। हालांकि पाकिस्तान की तरफ से भारतीय विमानों को गिराने का दावा किया गया था लेकिन भारतीय सेना ने इस पर कोई ऑफिशियल जवाब नहीं दिया था। इससे पहले राफेल विमान से जुड़ी एक बड़ी खबर भी आज सामने आई, जिसमें यह बताया गया कि फ्रांसिसी विमान निर्माता कंपनी डसॉल्ट ने फाइटर जेट के फ्यूजलाज को भारत में बनाने को कहा है।

रूस से खाली हाथ लौटा पाकिस्तान, मास्को ने निभाई दोस्ती

● रसिया ने कहा-वह भारत संग विवाद में मध्यस्थता नहीं करेगा

रूस की कोशिश, भारत और चीन साथ आएं

मास्को (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन और तुर्की जहां खुलकर पाकिस्तान के साथ खड़े थे। वहीं भारत का दशकों पुराना दोस्त और रक्षा भागीदार रूस इस दौरान नई दिल्ली की खुलकर मदद करता नहीं दिखाई दिया। इसके बाद सवालों का बाजार गरम हो गया। हालांकि अब रूस ने पाकिस्तान को करारा झटका दिया है और भारत के ही रुख में हां में हां मिलाया है। पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ ने रूस से मध्यस्थता की गुहार लगाते हुए अपने विशेष दूत को रूसी विदेश मंत्री सर्गेइ लावरोव के पास भेजा था। पुतिन के करीबी लावरोव ने पाकिस्तानी दल को साफ कह दिया कि वह भारत से सीधे बातचीत करे। वहीं डोनाल्ड ट्रंप ने पाकिस्तान की भाषा बोलते हुए मध्यस्थता का प्रस्ताव तक दे डाला था। इससे पहले रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने भारत, रूस और चीन के बीच रणनीतिक त्रिगुट की बैठक को फिर से आयोजित करने को लेकर बड़ा बयान दिया था। लावरोव ने यह भी दावा किया कि नाटो देश भारत को चीन विरोधी कदमों में शामिल कराने के लिए प्रयास कर रहे हैं। रूस चाहता है कि पश्चिमी देशों के प्रभाव को कम करने के लिए चीन और भारत के बीच दोस्ती कराकर एक ट्रायंगल बनाया जाए।

रूसी और चीनी विश्लेषकों का कहना है कि रूस के विदेश मंत्री लावरोव भारत और चीन में दोस्ती तो कराना चाहते हैं लेकिन बीजिंग और नई दिल्ली के बीच अविश्वास की खाई अब बहुत ज्यादा बढ़ चुकी है। खासकर ऑपरेशन सिंदूर के बाद तनाव और बढ़ा है जिसमें पाकिस्तान ने चीनी हथियारों से भारतीय विमानों पर हमला बोला था। हालांकि एक

विश्लेषक का कहना है कि भारत और चीन में दोस्ती की एक वजह डोनाल्ड ट्रंप बन सकते हैं। ट्रंप की आक्रामक और अप्रत्याशित नीतियां चीन और भारत दोनों को परेशान कर रही हैं।

लावरोव ने पिछले सप्ताह कहा, भारत और चीन सीमा पर तनाव को कम करने के लिए एक सहमति पर पहुंच रहे हैं। ऐसे में एक बार फिर से आरआईसी को फिर से शुरू करने का मौका आ गया है। लावरोव जल्द ही भारत की यात्रा पर आने वाले हैं। रूस कई बार यह कोशिश कर चुका है कि वह चीन और भारत को एक साथ लाए। रूस को डर सता रहा है कि उसका सबसे बड़ा हथियारों का खरीदार भारत पश्चिमी देशों के खेमे में जा रहा है। रूस ने भारत और चीन के बीच तनाव के दौरान बैठक कराई थी ताकि संबंधों को सामान्य किया जा सके। पुतिन ने भी दोनों नेताओं के साथ एक त्रिपक्षीय बैठक पर जोर दिया है। रूस के फार ईस्ट फेडरल यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर अर्तयोम लुकिन ने चीन के साउथ चाइना मार्निंग पोस्ट अखबार से बातचीत में कहा कि रूस के लिए इस रणनीतिक त्रिगुट का फिर से शुरू होना बेहद जरूरी है। इस त्रिगुट का विचार रूस के पूर्व पीएम येवगेनी प्रिमाकोव ने 1990 के दशक में दिया था। इसका मकसद अमेरिका के थोपे गए एकध्रुवीय विश्व का जवाब देना था। रूस ने ब्रिक्स के दौरान इस त्रिगुट को बढ़ावा दिया ताकि एक ऐसी विश्व व्यवस्था को बनाया जा सके जिस पर पश्चिमी देशों का दबदबा न हो। वहीं चीन के शंघाई स्थित फूदान विश्वविद्यालय में डेप्युटी डायरेक्टर लिन मिनवांग ने कहा कि तीनों पक्षों की अलग सोच हो सकती है। लिन ने कहा कि अमेरिका से निपटने के लिए रूस और चीन साथ आए हैं।

24 घंटे में एमपी के 20 जिलों में गिरा पानी

हरदा में 71 किमी प्रतिघंटा चली आंधी, भोपाल-इंदौर समेत 45 जिलों में आंधी-बारिश का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में पिछले 24 घंटे के दौरान आंधी और बारिश का दौर जारी रहा। 20 जिलों में बारिश हुई। इनमें मंदसौर, उज्जैन, धार, इंदौर, देवास, खंडवा, हरदा, नर्मदापुरम, सीहोर, रायसेन, विदिशा, भोपाल, शिवपुरी, मुरैना, ग्वालियर, सतना, रीवा, सिंगरौली, डिंडौरी और अनूपपुर शामिल हैं। सबसे ज्यादा धार के नालछा में 1 इंच बारिश हो गई।

दूसरी ओर, हवा की रफ्तार भी तेज रही। हरदा में 71 किमी प्रतिघंटा दर्ज की गई। वहीं, सीहोर में 65 किमी, रीवा में 52 किमी, सिंगरौली में 47 किमी, उज्जैन में 45 किमी, इंदौर में 37 किमी, ग्वालियर में 32 किमी और शिवपुरी में 28 किमी प्रतिघंटा रही। मौसम विभाग के मुताबिक, अगले 4 दिन यानी, 9 जून तक ऐसा ही मौसम रहेगा। इसके बाद मानसून भी प्रदेश में प्रवेश कर लेगा।

मौसम विभाग ने शुक्रवार के लिए जिन जिलों में अलर्ट जारी किया है, उनमें भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, उज्जैन, जबलपुर श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन,

नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, सीहोर, राजगढ़, शाजापुर, देवास, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, आगर-मालवा, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी, धार, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सागर, दमोह, नरसिंहपुर, सिवनी, मंडला, बालाघाट, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा शामिल हैं।

इसलिए ऐसा मौसम

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि दो साइक्लोनिक सर्कुलेशन और एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) की एक्टिविटी बनी हुई है। इस वजह से आंधी-बारिश वाला मौसम है। अगले 4 दिन ऐसा ही मौसम बना रहेगा।

रायसेन-उज्जैन समेत कई जिलों में बारिश, पारा लुढ़का

इससे पहले गुरुवार को प्रदेश में आंधी और बारिश का दौर जारी रहा। रायसेन, उज्जैन, धार में तेज बारिश हुई। रायसेन में 9 घंटे में करीब एक इंच पानी बरस गया। बारिश और बादल की वजह से कई शहरों में दिन के तापमान में गिरावट देखने को मिली। खजुराहो में ही पारा 40.2 डिग्री सेल्सियस रहा।

बाकी शहरों में पारा 40 डिग्री से कम रहा। रायसेन में तापमान 31.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 36.4 डिग्री, इंदौर में 35.7 डिग्री, ग्वालियर में 38.4 डिग्री, उज्जैन में 37 डिग्री और जबलपुर में पारा 38.2 डिग्री दर्ज किया गया।

सिवनी के कॉलेज में भारत माता की प्रतिमा स्थापित

मुख्यमंत्री ने वर्चुअल माध्यम से किया अनावरण, 101 थाल से हुई आरती

सिवनी (नप्र)। सिवनी के प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस के प्रांगण में भारत माता की प्रतिमा का अनावरण हुआ। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने वर्चुअल माध्यम से इस कार्यक्रम की शुरुआत की। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत माता हमारी आस्था का प्रतीक हैं। उन्होंने बताया कि विश्व के सैकड़ों देशों में भारत ही एक ऐसा देश है, जहां मातृभूमि को भारत माता के रूप में संबोधित किया जाता है। कार्यक्रम में राष्ट्रीय भावना से जुड़े गीतों का प्रस्तुतिकरण किया गया। साथ ही 101 सजे हुए थालों से भारत माता की आरती की गई। कार्यक्रम में सिवनी विधायक दिनेश राय मुनमुन, नगर पालिका अध्यक्ष ज्ञानचंद सनोडिया और छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. इंद्र प्रसाद त्रिपाठी शामिल थे। कलेक्टर संस्कृति जैन, पुलिस अधीक्षक सुनील मेहता और जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष अजय बाबा पांडेय भी मौजूद रहे। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रविशंकर नाग के साथ वर्तमान छात्र-छात्राएं, पूर्व विद्यार्थी और सेवानिवृत्त प्राध्यापक भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

मंत्री विजयवर्गीय की कार को दूसरी गाड़ी ने मारी टक्कर

- इंदौर के नगर निगम चौराहे पर हुआ एक्सीडेंट

इंदौर (नप्र)। इंदौर में कैबिनेट मंत्री की कार का देर रात एक्सीडेंट हो गया। एक अन्य कार ने उनकी गाड़ी को हल्की टक्कर मार दी। हालांकि इस मामले में किसी तरह की कानूनी कार्रवाई नहीं की गई। टक्कर मारने वाली कार में एक परिवार सवार था, जिन्हें समझाइश देकर रवाना कर दिया गया।

नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय की कार को गुरुवार देर रात नगर निगम चौराहे के पास कार ने टक्कर मार दी। बताया जाता है कि वह कार मच्छी बाजार इलाके की तरफ से आ रही थी। मंत्री की कार अचानक सामने आ जाने से चालक संतुलन खो बैठा और ब्रेक लगाने के दौरान टक्कर हो गई। हालांकि इस दौरान कैलाश विजयवर्गीय स्वयं कार में सवार थे। उन्होंने कार में सवार परिवार को देखकर समझाइश दी और जाने दिया। इस मामले में किसी प्रकार की शिकायत दर्ज नहीं की गई है।

251 किलो आम से सजा बाबा खाटू श्याम का बगीचा

- आज वैष्णो धाम मंदिर में विशेष आयोजन

भोपाल (नप्र)। निर्जला एकादशी के पावन अवसर पर प्लेटिनम प्लाजा स्थित मां वैष्णो धाम आदर्श नवदुर्गा मंदिर एवं बाबा खाटू श्याम मंदिर में विशेष आयोजन हुआ। यहां बाबा खाटू श्याम का भव्य आम बगीचा सजाया गया है, जिसमें 251 किलो आम बाबा को भोग स्वरूप अर्पित किए। मंदिर समिति के अनुसार, हर वर्ष निर्जला एकादशी को 'आम खानी एकादशी' के रूप में भी मनाया जाता है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस बार बाबा का आमों से श्रृंगार किया जा रहा है। मंदिर परिसर को आम के बगीचे की थीम पर सजाया जाएगा। विभिन्न प्रजातियों के आमों से मंडप, तोरण और आभूषण तैयार किए गए हैं, जो श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र रहेंगे। भोग के उपरांत सभी भक्तों को आम का प्रसाद वितरित किया जाएगा। आयोजकों ने शहरवासियों से इस आयोजन में भाग लेकर बाबा का आशीर्वाद पाने की अपील की है।

क्या है निर्जला एकादशी का महत्व

हिंदू पंचांग के अनुसार, गंगा दशहरा के बाद आने वाली एकादशी को निर्जला एकादशी कहा जाता है। यह वर्ष की सबसे कठिन और पुण्यदायिनी एकादशी मानी जाती है, जिसमें भक्त बिना जल ग्रहण किए व्रत रखते हैं। कहा जाता है कि इस दिन व्रत और दान का फल साल भर की सभी एकादशियों के बराबर होता है। आज के दिन भोपाल सहित देशभर के श्याम मंदिरों में विशेष आयोजन हो रहे हैं। प्लेटिनम प्लाजा का यह आम बगीचा आयोजन शहर में पहली बार इस रूप में हो रहा है, जो श्याम प्रेमियों के बीच खास आकर्षण बना हुआ है।

मां से कहा था-बाइक खरीदी इसीलिए सीनियर्स कर रहे रैगिंग

- जबलपुर में मेडिकल स्टूडेंट के परिजन का आरोप

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में सुसाइड करने वाले मेडिकल स्टूडेंट शिवांश गुप्ता के परिजन ने रैगिंग का आरोप लगाया है। शिवांश के चाचा दिनेश गुप्ता ने कहा- उसने तीन दिन पहले ही मां को फोन कर सीनियर्स द्वारा रैगिंग करने की बात कही थी।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस मेडिकल कॉलेज में फर्स्ट ईयर में पढ़ने वाले शिवांश ने गुरुवार को हॉस्टल की चौथी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली थी। शुक्रवार को पोस्टमार्ट्म के बाद शिवांश का शव परिजन को सौंपा गया तो छात्रों की भीड़ जमा हो गई। परिजन ने जबलपुर पुलिस और प्रशासन से मांग की है कि मामले की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए। उधर, मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. नवीन सक्सेना ने जांच के लिए 5 सदस्यीय कमेटी बना दी है।

मां से फोन पर कहा था- रैगिंग हो रही है- 18 साल 7 महीने के शिवांश गुप्ता ने फर्स्ट अटेम्प्ट में ही नीट परीक्षा पास की थी।

कांग्रेस की सभा में मंच पर नहीं बैठे पूर्व सीएम

- दिग्विजय सिंह ने बताई वजहें, बोले- नेताओं के समर्थक मंच पर कब्जा जमा लेते

भोपाल (नप्र)। जबलपुर में 31 मई को हुई कांग्रेस की जयहिंद सभा में पूर्व सीएम और कांग्रेस के सीनियर लीडर दिग्विजय सिंह मंच पर नहीं बैठे। पूर्व मंत्री और जबलपुर से विधायक लखन घनघोरिया दिग्विजय सिंह के पैर छूकर मंच पर बैठने का आग्रह करते रहे। लेकिन, दिग्गी इसके बावजूद मंच पर नहीं बैठे। दिग्विजय सिंह ने मंच पर न बैठने की सात वजहें बताई हैं।

दिग्विजय सिंह ने फेसबुक पर एक पोस्ट में लिखा- कांग्रेस पार्टी के कार्यक्रमों में मंच पर नहीं बैठने के निर्णय के संबंध में। कांग्रेस को कार्यकर्ताओं के बीच रहना होगा।

मेरा मंच पर न बैठने का निर्णय केवल व्यक्तिगत विनम्रता नहीं बल्कि संगठन को विचारात्मक रूप से सशक्त करने की सोच को लेकर उठाया गया कदम है। यह निर्णय कांग्रेस की मूल विचारधारा, समता, अनुशासन और सेवा का प्रतीक है।

दिग्विजय ने लिखा- आज कांग्रेस का काम करते हुए कार्यकर्ताओं को नया विश्वास और हौसला चाहिए। इसके लिए संगठन में जितनी सादगी होगी उतनी सुदृढ़ता आएगी।

2018 और 2023 में भी मंचों से परहेज किया

राहुल गांधी के अध्यक्षीय कार्यकाल का दिया उदाहरण दिग्विजय सिंह ने आगे लिखा- खुद राहुल गांधी जी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष रहते हुए ऐसी मिसाल प्रस्तुत कर चुके हैं। 17 मार्च 2018 को दिल्ली में तीन दिवसीय कांग्रेस का पूर्ण राष्ट्रीय अधिवेशन इस बात का गवाह रहा है।

उस अधिवेशन में राहुल जी, सोनिया जी सहित सभी वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता मंच से नीचे दीर्घा में ही बैठे थे। यहां तक कि स्वागत-सत्कार भी मंच से नीचे उनके बैठने के स्थान पर ही हुआ। मैं समझता हूं, वह फैसला कांग्रेस पार्टी का सबसे सफलतम प्रयोग था।

बापू भी असहयोग आंदोलन के दौरान जमीन पर बैठते थे

दिग्विजय ने लिखा- कांग्रेस अपनी शुरुआत से ही ऐसे उदाहरणों से भरी हुई है। महात्मा गांधी से लेकर राहुल गांधी तक अनेक मौकों पर नेताओं का जनता के बीच में रहना और उनके साथ बैठना मिसाल बनता रहा है।

जीतू पटवारी बोले-

सिंधिया बाराती घोड़े, सत्ता के आसपास नाचते हैं

बीजेपी विधायक का जवाब- ज्योतिरादित्य कोहिनूर हैं, कांग्रेस उन्हें कबाड़ समझती थी

भोपाल (नप्र)। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने 3 जून को भोपाल के रवींद्र भवन में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए तीन घोड़ों का उदाहरण दिया। राहुल ने लंगड़े घोड़े, बारात के घोड़े और रेस के घोड़ों का उदाहरण दिया। लंगड़े घोड़े के बयान पर बीजेपी के नेता राहुल पर पलटवार कर रहे हैं। अब पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने राहुल गांधी के बयान का संदर्भ बताते हुए ज्योतिरादित्य सिंधिया को बारात का घोड़ा बताया है और कहा कि ये सत्ता के आसपास नाचते हैं। पटवारी के बयान पर बीजेपी विधायक प्रीतम लोधी ने कहा- ज्योतिरादित्य सिंधिया तो कोहिनूर हैं कांग्रेस उन्हें कबाड़ समझती थी।

पटवारी ने बताया राहुल के बयान का मतलब

पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा- दो दिनों से मैंने ज्योतिरादित्य सिंधिया का बयान देखा। सिंधिया जी विदेश में पढ़े हुए हैं। भारतीय परंपराओं में मुहावरों और अलग-अलग तरीके से बात कहते हैं। वह शायद उनके समझ नहीं आती है।

मैं मानता हूं कि राहुल गांधी जी ने कार्यकर्ताओं को मोटिवेट किया। उन्होंने कहा जो काम करेगा, जो बहादुरी से लड़ेगा पार्टी उसके साथ खड़ी रहेगी।

पटवारी ने कहा कि एक और तरह के लोग होते हैं। जब सत्ता आती है तब वे अपना व्यू बनाते हैं।

वैसे लोग सब पार्टियों में हैं। केवल कांग्रेस में ही नहीं बीजेपी में भी हैं। सत्ता से जुड़े हुए बीजेपी में हमारे ही कई लोग गए हैं। वो सत्ता के लिए ही तो गए हैं।

हम हर हालत में इस बार सत्ता में आएंगे

तीसरी बात जो राहुल गांधी ने कही कि दिव्यांग होता है इंसान। उसका पूरा सम्मान है। जो कहावतें है वो एक तरह से अपनी बात कहने का तरीका है। ऐसे लोग कई पार्टियों में होते हैं। जो काम करना नहीं न्यूसेंस करना चाहते हैं। उन लोगों को कहा कि जब सत्ता आएगी तो तब आपका उपयोग है। जीतू पटवारी ने कहा- मेरा मानना है कि बीजेपी इस बात से घबरा रही है कि कांग्रेस खड़ी कैसे हो रही है। ये लड़ने कैसे लगे। ये तो हार गए थे। कांग्रेस में इतना जनसैलाब कैसे आने लगा? हमारी तरफ तो बीजेपी वाले देखते ही नहीं थे। हमें तो वो समझते थे कि ये तो डस्टबिन का हिस्सा बन गए। अब वो रिएक्शन करने लगे यानी पार्टी सही दिशा में आगे बढ़ रही है। हम हर हालत में इस बार सत्ता में आएंगे।

साउथ इंडिया से हुई मध्यप्रदेश में कोरोना की एंट्री

- विदेशों से आए मरीजों से फैला संक्रमण ● एक्सपर्ट बोले-केरल जैसी जांच हो तो केस कई गुना बढ़ेंगे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में इस सीजन कोरोना की एंट्री साउथ इंडिया से हुई है। पहला केस 23 मई को सामने आया, जिसके बाद से लगातार कोरोना केसेस बढ़ रहे हैं। शुरुआती मामलों में मरीजों की केरल और बेंगलुरु की ट्रैवल हिस्ट्री देखी गई।

अब तक सामने आए कुल 50 मामलों में से करीब 40 प्रतिशत मरीज या तो देश के अन्य राज्यों से लौटे थे या किसी बाहर से आए संक्रमित के संपर्क में आए थे। यह स्थिति इसलिए भी चिंताजनक है क्योंकि बीते 20 दिनों में देशभर में एक्टिव केस 93 से बढ़कर 5,364 हो गए हैं। यानी 16 मई की तुलना में 6 जून को देश में 5,274 ज्यादा एक्टिव केस हैं।

भोपाल में डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन रोका

सैलरी नहीं मिलने पर कर्मचारी नाराज; अफसर के आश्वासन के बाद माने

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में शुक्रवार सुबह डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन का काम करीब डेढ़ घंटा थमा रहा। सैलरी नहीं मिलने से नाराज कर्मचारियों ने कचरा ट्रांसफर स्टेशनों पर ही गाड़ियां खड़ी कर दी। जैसे ही यह जानकारी अफसरों तक पहुंची, उन्होंने कर्मचारियों को आश्वासन दिया कि सैलरी आज ही बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कर दी जाएगी। इसके बाद कर्मचारी माने और कचरा उठाया जाने लगा।

नगर निगम में करीब 6 हजार दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी हैं। जिनमें सफाई मित्र और वाहन चालक शामिल हैं। इन्हें हर महीने 10 से 12 तारीख तक सैलरी मिलती है। इस बार

ईद होने की वजह से पहले सैलरी की मांग कर रहे थे, लेकिन गुरुवार शाम तक सैलरी नहीं मिली। इसके चलते शुक्रवार सुबह उन्होंने ट्रांसफर स्टेशनों पर ही गाड़ियां खड़ी कर दी और गली-मोहल्लों में कचरा लेने नहीं पहुंचे। करीब डेढ़ घंटा तक उनका प्रदर्शन चला।

विरोध के बाद दिया आश्वासन- नगर निगम भोपाल सार्थक कर्मचारी संघ के बैनरतले कर्मचारियों ने यह प्रदर्शन किया और विरोध दर्ज कराया। इसके बाद डिप्टी कमिश्नर चंचलेश गिरहारे ने चर्चा की।

15 अगस्त तक पोर्टल से हर हाल में दें रिपोर्ट

एसीएस ने मेडिको लीगल रिपोर्ट, एमएलसी, पीएम रिपोर्ट को लेकर कलेक्टर-एसपी को दिए निर्देश

भोपाल (नप्र)। गृह विभाग ने सभी कलेक्टरों और पुलिस अधीक्षकों से कहा है कि मेडिको लीगल रिपोर्ट, एमएलसी और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन देने की व्यवस्था लागू हो गई है। पुलिस और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इसलिए सभी कलेक्टर तथा पुलिस अधीक्षक इस व्यवस्था के प्रभावी क्रियान्वयन की व्यवस्था तय करें। सभी जिलों में 15 अगस्त तक एमएलसी और पोस्टमॉर्ट्म रिपोर्ट पोर्टल के माध्यम से सौ फीसदी देना तय करें।

अतिरिक्त मुख्य सचिव गृह जेएन कंसोटिया ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से कलेक्टरों और पुलिस अधीक्षकों से कहा कि इसके लिए संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रशिक्षण दें। समय पर रिपोर्ट प्राप्त होने पर अपराधों की विवेचना और कोर्ट में चालान पेश करने में तेजी आएगी। कंसोटिया ने यह भी कहा कि ऐसे प्रकरणों में अब डॉक्टरों को न्यायालय में गवाही के लिए उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं है। डॉक्टर वीडियो कान्फ्रेंसिंग के

माध्यम से अपनी गवाही दे सकते हैं। अभी 10 जिलों में जिला अस्पतालों में वीडियो कान्फ्रेंसिंग की व्यवस्था कर दी गई है। शीघ्र ही सभी जिलों में इसकी व्यवस्था कर दी जाएगी।

संवेदनशील स्थान तय करा लें एसपी, सायरन वाले स्थानों की सूची बनाएं

एसीएस कंसोटिया ने यह भी कहा कि पुलिस अधीक्षक जिले के संवेदनशील स्थानों का निर्धारण कर लें। जिले में सायरन स्थापित करने वाले स्थानों की सूची भी अपने हिसाब से बनाएं। उन्होंने कहा कि शासन द्वारा तय प्रावधानों के अनुसार जनसंख्या का लगभग एक प्रतिशत सिविल डिफेंस वॉलेंटियर के रूप में पंजीकृत होना है। इसलिए इन मापदंडों के अनुसार वॉलेंटियर का चयन करके पोर्टल में जानकारी दर्ज कराएं। इन्हें प्रशिक्षण तथा पहचान पत्र प्रदान करें।

जिला और विकासखंड स्तर पर कराएं आपदा प्रबंधन बैठकें

कलेक्टर इनकी तैनाती अपने लेवल पर करें जिससे किसी भी प्राकृतिक अथवा अन्य आपदा में इनसे समुचित सहयोग लिया जा सके। कंसोटिया ने कहा कि सभी जिलों में आपदा प्रबंधन के लिए कंट्रोल रूम तथा ऑपरेशन सेंटर तत्काल बना दें। अस्पतालों में दुर्घटना और आपदा के समय पीड़ितों के उपचार की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित कर लें। वर्षाकाल में अब बारिश आने में ज्यादा समय नहीं है। इसलिए जिला और विकासखण्ड स्तर पर आपदा प्रबंधन की बैठकें करके राहत और बचाव कार्य के प्रबंधों की समीक्षा कर लें।

संपादकीय

अब ठीकरा फोड़ने की होड़

बेंगलुरू आरसीबी के आईपीएल कप जीतने के जश्न के दौरान चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर मची भगदड़ में 11 लोगों की मौत के भयंकर हादसे का ठीकरा एक-दूसरे के सिर फोड़ने का सिलसिला शुरू हो गया है। शुरूआती लीपापोती के बाद कर्नाटक की सिद्धारमैया सरकार ने पहले बेंगलुरू के वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की और आरसीबी टीम के मैनेजर के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। हैरानी की बात यह है कि इस आयोजन की जिम्मेदारी अब कोई नहीं ले रहा है और इसके लिए सब एक-दूसरे को दोषी ठहरा रहे हैं। बताया जाता है कि इस एफआईआर में बेंगलुरू पुलिस ने दावा किया है कि उसने आरसीबी को चिन्नास्वामी स्टेडियम में कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति नहीं दी थी, जिसके आस-पास भगदड़ हुई और लोगों की जानें गईं। एफआईआर में आरसीबी को पहले आरोपी के तौर पर नामित किया गया है, साथ ही डीएनए एंटरटेनमेंट (जो फ्रैंचाइज़ी के इवेंट पार्टनर हैं) और कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ (केएससीए) के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज हुई है, जो चिन्नास्वामी स्टेडियम का प्रबंधन करता है। पुलिस ने आरसीबी प्रबंधन के निखिल सोसले और इवेंट मैनेजमेंट कंपनी डीएनए से सुनील मैथ्यू को गिरफ्तार कर लिया। दोनों को केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से हिरासत में लिया गया। पुलिस के अनुसार, दो और लोगों को भी इस मामले में हिरासत में लिया गया है, जिनकी भूमिका की जांच की जा रही है। पुलिस रिपोर्ट में भारतीय न्याय संहिता की छह धाराएं शामिल हैं- 105 (गैर इरादतन हत्या के लिए दंड), 115 (स्वेच्छा से नुकसान पहुंचाना), 118 (खतरनाक साधनों/हथियारों से स्वेच्छा से गंभीर चोट पहुंचाना), 132 (लोक सेवक को उनके कर्तव्य से रोकने के लिए हमला या आपराधिक ड्रोन), 125 (दूसरों के जीवन या व्यक्तिगत सुरक्षा को खतरे में डालने वाला कार्य) और 190 (गैरकानूनी सभा) आदि। पुलिस का यह भी कहना है कि उसने स्थिति को संभालने की पूरी कोशिश की, लेकिन आयोजकों ने पुलिस की चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया। ऐसे में सवाल यह उठ रहा है कि इस भयावह हादसे के लिए आखिर जिम्मेदार कौन है? कर्नाटक क्रिकेट संघ, आरसीबी या राज्य सरकार? बीसीसीआई पहले ही इस आयोजन से अपना पल्ला झाड़ चुकी है। हालांकि शहर में विक्ट्री परेड निकालने का ऐलान पहले आरसीबी ने ही किया था, जो बाद में पुलिस की सलाह पर रद्द कर उसे स्टेडियम में विजेता टीम के स्वागत में तब्दील कर दिया गया। स्वागत समारोह देखने के लिए पास भी जारी किए गए थे, लेकिन इस जीत को लेकर जो हाइप बनाई गई, उसकी वजह से 35 हजार क्षमता वाले चिन्नास्वामी स्टेडियम में 3 लाख से ज्यादा लोग जा पहुंचे, जिनमें ज्यादातर युवा थे। जिसे संभालना पुलिस और आयोजकों के लिए असंभव हो गया। लेकिन इन तथ्यों के बाद भी कर्नाटक की सिद्धारमैया सरकार अपनी जिम्मेदारी और जवाबदेही से नहीं बच सकती। राज्य के गृह मंत्री परमेश्वरा ने कहा कि पूरा कार्यक्रम केएससीए और आरसीबी ने आयोजित किया था। सरकार ने इस समारोह में सिर्फ भाग लिया था। अगर ऐसा ही था कि राज्य के उपमुख्यमंत्री डी.के.शिवकुमार विजेता टीम का स्वागत करने एयरपोर्ट क्यों गए थे? शिवकुमार जिस तरह से विजेता ट्रॉफी को अपने कंधे पर लेकर गर्व से मुस्कुरा रहे थे, उसी से साफ था कि मामला केवल समारोह में सरकार की शिरकत तक सीमित नहीं है। सरकार खुद चाह रही थी कि वो इस जीत का यथासंभव राजनीतिक दोहन करे। अब यह भी कोई छुपी बात नहीं है कि जल्दबाजी में किए गए इस आयोजन को सरकार का पूरा समर्थन था और बात बिगड़ गई तो ठीकरा प्रशासन और आरसीबी पर फोड़ा जा रहा है। जो हो रहा है, वह कोई अच्छा संकेत नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र का अमृत पथ गढ़ेंगी एनालेना

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

यूएन महासभा का 80वाँ सत्र सितम्बर 2025 में आरंभ होगा. जैसा कि सर्वविदित है कि यूएन जनरल असेम्बली की अध्यक्षता हर वर्ष अफ्रीका, एशिया-प्रशान्त, पूर्वी योरोप, लातिन अमेरिका व कैरीबिया, पश्चिमी योरोप व अन्य, इन पाँच क्षेत्रीय समूहों में बारी-बारी से बदलती है. इस बारी जर्मनी को यह जिम्मेदारी मिली और जर्मनी ने अपने देश की पूर्व विदेश मंत्री एनालेना बेयरबॉक को 80वें सत्र के लिए महासभा अध्यक्ष हेतु नॉमिनेट किया. उन्हें 193 सदस्यीय देशों वाले संगठन संयुक्त राष्ट्र में महासभा की अध्यक्षता के लिए कुल 167 वोट हासिल हुए और वह अब विजयी घोषित की जा चुकी हैं.

बहुत दिलचस्प बात यह है कि 193 सदस्य देशों वाली महासभा में गोपनीय मतदान होते हैं. एनालेना बेयरबॉक यद्यपि जर्मनी की ओर से एकमात्र उम्मीदवार थीं जिसे स्टेट द्वारा नॉमित किया गया था. उन्हें 167 वोट मिले. हेल्गा शिमड स्व-नामांकित प्रत्याशी थीं. हेल्गा शिमड को भी सात मत प्राप्त हुए. इस प्रक्रिया में 14 प्रतिनिधि सदस्य देशों ने वोटिंग नहीं की और वोट देने में प्रतिभागिता ही नहीं की. लेकिन हेल्गा शिमड के उम्मीदवार बन जाने से यह मतदान दिलचस्प बन गया. यदि हेल्गा के परफ़ॉर्मेंस का मूल्यांकन किया जाए तो यह कहना बिल्कुल गलत न होगा, की उनका भी इस प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन रहा. विजयश्री तो एनालेना बेयरबॉक को मिली और अब वह नए सत्र शुरू होने पर यूएनजीए 80वें सत्र की अध्यक्ष की जिम्मेदारी निभाएंगी और विश्व के समस्त आगंतुक देशों को संयुक्त राष्ट्र महासभा में दुनिया की विविध चुनौतियों व संभावनाओं पर बहस के साथ आगे बढ़ेंगी.

स्त्रियों का वैश्विक सम्मान

स्त्रियों के लिए यह पुन: गर्व की बात है कि जर्मन की पूर्व विदेश मंत्री जो कि एक सशक्त स्त्री हैं, वह 80वें ऐतिहासिक सत्र की अध्यक्षता करेंगी. जर्मन सरकार ने इसलिए एनालेना बेयरबॉक को नामांकित करके व उनकी जीत हासिल करके एक बड़ा मैसेज दुनिया को दिया है और समस्त स्त्री समाज को गर्व से भर दिया है. अहम् बात यह है कि पश्चिमी योरोपीय समूह क्षेत्र से इस दायित्व को संभालने वाली वह पहली और महासभा की पाँचवी महिला अध्यक्ष होंगी. एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह बहुत कम उम्र की हैं. मात्र 44 वर्षीय हैं एनालेना बेयरबॉक. कम उम्र में वैश्विक पटल पर एक बेहद चुनौतीपूर्ण समय में वह इस पद को संभाल रही हैं जब हिंसक टकराव बढ़े हैं. आतंकवाद बढ़ा है. युद्ध के मोहाने पर कई देश खड़े हैं और कई देश युद्ध की आग लिए धधक रहे हैं. बड़े पैमाने पर विश्व में शरणार्थियों की संख्या बढ़ी है. जलवायु संकट व टिकाऊ विकास के लक्ष्य हासिल करने को लेकर संयुक्त राष्ट्र सशंकित है. विश्व में वित्तीय दबाव बढ़े हैं और मैडम एनालेना बेयरबॉक के ही कार्यकाल में संयुक्त राष्ट्र के नए महासचिव की चयन प्रक्रिया शुरू होगी और कोई नया चेहरा संयुक्त राष्ट्र की बागडोर संभालेगा.

चुनौतियाँ बहुत हैं

यहाँ समस्या इस बात की बहुत बड़ी है कि संयुक्त राष्ट्र के बहुपक्षवाद को नई धार देना ज़रूरी है क्योंकि युद्धरत देशों ने कई बार संयुक्त राष्ट्र को अंगूठे दिखाकर मनमानी सैन्य कार्रवाई की और हथियारों का इस्तेमाल किया है. इसलिए यह माना जा रहा है कि वैश्विक बहुपक्षीय व्यवस्था के लिए एक अहम पड़ाव है. यूक्रेन, ग़ाज़ा व अन्य क्षेत्रों में जारी युद्धों का अन्त कराने के प्रयासों पर सुरक्षा परिषद गतिरोध का सामना कर रही है, यह तो है ही साथ ही इस गतिरोध के लिए कई बार निंदा करना नाकाफी सा लगने लगा है. वीटो अधिकार प्राप्त देशों की भी आपस में कोई बहुत अच्छी दोस्ती व संबंध निर्वाह की प्रतिबद्धता नहीं दीखती. ऐसे में चाहे सुरक्षा परिषद् हो या शांति कायम करने वाली दूसरी एजेंसीज जिसका गवर्नेंस संयुक्त राष्ट्र करता है, वहां अनेक चुनौतियाँ हैं. कोई भी प्रस्ताव वीटो अधिकार प्राप्त देशों पर आ टिकते हैं और समस्याएं मिटती नहीं. चीन, फ्राँस, रूस, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका के आपस में अपने-अपने हित जब-जब टकराते हैं तो संयुक्त राष्ट्र को बहुत असहज भी होना पड़ता है. सहमति का बहुपक्षीय होना, बहुपक्षवाद को अंदर से हिला देता है. एनालेना बेयरबॉक जो कि जर्मन सरकार में विदेश मंत्री का दायित्व संभाल चुकी हैं, उनके नेतृत्व के लिए यह चुनौतियाँ हैं लेकिन उनका जो सौम्य स्वभाव है और जिस कूटनीतिक रणनीतिकार के रूप में विश्व में उनकी छवि है, उससे उम्मीदें हैं और वह सफल होंगी, यह पूर्ण विश्वास को लेकर दुनिया से उन्हें 167 वोट मिले हैं. इसका अर्थ है कि दुनिया के 167 देश एनालेना बेयरबॉक पर पूर्ण विश्वास व भरोसा करते हैं.

भरोसा क्यों है?

एनालेना बेयरबॉक पर भरोसा इसलिए है क्योंकि महासभा अध्यक्ष के आगामी कार्यकाल के लिए उन्होंने जो प्राथमिकताएँ प्रस्तुत की है वह बहुत ही प्रासंगिक हैं. यथा संयुक्त राष्ट्र को और अधिक दक्ष व प्रभावी बनाना, टिकाऊ विकास के 2030 एजेंडा को आगे बढ़ाना, और महासभा को सही मायनों में एक समावेशी फ़ोरम बनाना. समावेशी-दर्शन की हिमायती एनालेना का विश्वास ही उनकी कूटनीतिक विश्वास की धुरी बनने जा रहा है, एक बात तो यह तय है. दूसरी बात उन्होंने खुद कहा कि मैं देखती हूँ कि संयुक्त राष्ट्र महासभा की विविधता ही हमारी शक्ति है. यही वो स्थान है, जहाँ सभी राष्ट्र एक साथ मिलते हैं. और जहाँ हर देश के पास एक चेयर व एक आवाज़ है।

सुश्री एनालेना ने लैंगिक समानता, बहुपक्षवाद, नागरिक समाज व युवजन के साथ सम्पर्क व बातचीत को बढ़ावा देने की पैरवी की है. यह उनके युवा नेतृत्व में विश्वास को प्रकट करता है. उनके भीतर के युवा जोश का प्रदर्शन है. उन्हें यह पता है कि बिना लैंगिक समानता व युवा नेतृत्व से सामंजस्य के कोई भी दुनिया की सफलता हासिल नहीं हो सकती. यह भाव ही उन्हें दुनिया में उनके व्यक्तित्व के साथ श्रेष्ठ बनाते हैं. ऐसे ही लोगों पर यदि दुनिया की बड़ी बहुपक्षीय संसद ने भरोसा जताया है तो यह बहुत ही उपयुक्त है और उत्कृष्ट भविष्य की ओर साथ-साथ बढ़ने का संकेत भी है. संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुटेरेश स्वयं लैंगिक समानता की बात करते हैं. सुश्री एनालेना के भी साथ आने से निश्चय ही संयुक्त राष्ट्र को इस दिशा में सकारात्मक दिशा तय करने में बल मिलेगा.

सुश्री एनालेना पर इसलिए भी भरोसा है क्योंकि वह चाहती हैं कि संयुक्त राष्ट्र को बहुमुखी विश्वास के साथ आगे ले जाया जाए. यह युवा नेत्री की अपनी क्षमता ही मानी जाएगी कि वह इस प्रकार की संभावनाओं का विश्व बनाने के पक्ष में अपने विजन-प्लान के साथ स्वयं को खड़ा करती हैं.

संयुक्त राष्ट्र की नई छवि बनेगी

सुश्री एनालेना बेयरबॉक के राजनीतिक करियर की शुरुआत उनके माता-पिता ने की थी. उन्हें 1980 के दशक में परमाणु-विरोधी प्रदर्शनों में ले गए थे. अपनी निजी वेबसाइट पर, वह अपनी किशोरावस्था से ही विश्वव्यापी अन्याय से प्रभावित होने व उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का वर्णन करती हैं. इससे उनके जीवन के उत्कृष्ट सोच को समझा जा सकता है. इस दृष्टि व सोच से विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि विश्व में संयुक्त राष्ट्र को एक शांतिपूर्ण, सौम्य व सर्वहितकारी बनाने में वह पुरजोर कोशिश करेंगी. 25 वर्ष की उम्र में ही ग्रीन पार्टी में अपनी विशिष्ट उपस्थिति व राजनितिक समझ के लिए सुप्रसिद्ध सुश्री एनालेना निश्चय ही संयुक्त राष्ट्र की नयी छवि गढ़ेंगी. उनके बारे में विशेषज्ञों का दावा है कि एनालेना बैरबॉक जानती हैं कि अपने पैरों पर कैसे खड़ा होना है. इसलिए मेरी यह मान्यता बलवती हो जाती है कि वह यह भी जानती हैं कि संयुक्त राष्ट्र हित को साधने के लिए अमृत मंत्र क्या है और इसका अमृत पथ कैसे सजेगा।

देश को छोटा दिखाने का अपकर्म न करें

राजनीति

अवधेश कुमार

लेखक दिल्ली निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

हमारे सामने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर देश के दो परस्पर विरोधी दृश्य हैं। विदेश गया सर्वदलीय सांसदों के प्रतिनिधिमंडल ने इस तरह भारत का पक्ष प्रस्तुत किया जैसे देश पाकिस्तान केंद्रित सीमा पार आतंकवाद, जम्मू कश्मीर तथा ऑपरेशन सिंदूर को लेकर पूरी तरह एकजुट है और कोई विपक्ष है ही नहीं। दूसरी ओर आप पहलगाम हमले से लेकर ऑपरेशन सिंदूर और उसके बाद देश के अंदर विपक्ष की भूमिका देखिए, किसी भी देशभक्त और सच्चाई का ज्ञान रखने वाले निष्पक्ष व्यक्ति का दिल दहल जाएगा या फिर उसको गुस्सा आएगा। ऐसा कोई दिन नहीं जब विपक्ष के बड़े नेता ऑपरेशन सिंदूर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार को घेरने की कोशिश नहीं कर रहे। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पहले दिन से प्रश्न उठा रहे हैं कि हमारे कितने लड़ाकू विमान को नुकसान हुआ। लगभग यही स्वर कांग्रेस के अध्यक्ष एवं राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे का है। जयराम रमेश ने तो लगता है जैसे ऑपरेशन सिंदूर को ही अपने सोशल मीडिया का मुख्य विषय बना दिया है। सबसे अंतिम हमला सिंगापुर शांग्रीला सम्मेलन में चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ सीडीएस अनिल चौहान के भाषण और ब्लूमबर्ग को दिए साक्षात्कार पर है। सभी नेता एक साथ टूट पड़े हैं कि अब सरकार बताये कि कितने राफेल नष्ट हुए इस पर संसद का विशेष सत्र बुलायें तथा रिव्यू कमेटी यानी पुनरीक्षण समिति बनाया जाये।

इसमें यहां विस्तार से जाने की आवश्यकता नहीं है। सीडीएस का पूरा इंटरव्यू सबके सामने है। उसमें कहीं नहीं है कि पाकिस्तान ने हमारे कितने लड़ाकू विमान गिराये या हमें कोई बड़ी क्षति हुई। यह सामान्य बात है कि कोई भी युद्ध या लड़ाई एकपक्षीय क्षति वाली नहीं होती। यही सीडीएस ने कहा है। किसी को ज्यादा क्षति होगी किसी को कम। मूल बात यह है कि भारत ने पाकिस्तान के सैन्य दुस्साहस का ऐसा करारा प्रत्युत्तर दिया जिससे उसकी हुई व्यापक क्षति के बारे में दुनिया के विशेषज्ञ बता रहे हैं और उनसे संबंधित उपग्रह के चित्र आदि सामने ले जा चुके हैं। कई बार लगता है कि हम सरकार को घेर रहे हैं सेना और देश को नहीं। किंतु इसका दूसरा पहलू यही है कि सरकार निर्णय करती है क्रियान्वित सेना करती है। सेना सरकार के लिए नहीं देश के लिए सैन्य कार्रवाई करती है। ऑपरेशन सिंदूर में सरकार ने यह तय नहीं किया होगा कि सेना कैसे कार्रवाई करे कि हथियार, लड़ाकू विमान, मिसाइल, रडार आदि का प्रयोग करें या कितने जवान उनमें लगें। जिस तरह पहलगाम हमले के बाद प्रधानमंत्री चीफ ऑफ़ डिफेंस स्टाफ, तीनों सेना के प्रमुखों से लेकर विदेश मंत्री, उनसे जुड़े मंत्रालय,रक्षा मंत्री, मंत्रालयों के अधिकारी एवं अन्य अलग-अलग आवश्यक क्षेत्र के शीर्ष लोगों से मिल रहे थे उससे साफ था की रणनीति पर गहराई से विचार हो रहा है। निश्चित रूप से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने चरित्र के अनुरूप एक-एक पहलू समझने की कोशिश की होंगी। उदाहरण के लिए उनके कौन-कौन से ऐसे प्रमुख आतंकवादी अड्डे हैं, जिन्हें ध्वस्त करने से न केवल प्रतिशोध पूरा होगा, बल्कि पाकिस्तान की सेना और सत्ता को प्रत्युत्तर मिलेगा तथा सीमा पार से आतंकवादी गतिविधियां वर्षों तक संभव नहीं हो पाएगी। उन्हें कैसे ध्वस्त करेंगे, कैसे ध्वस्त करेंगे, कहां से करेंगे, उनका सीमा पर क्या असर होगा तथा पाकिस्तान किस तरह की प्रतिक्रिया दे सकता है और उसकी प्रतिक्रिया के प्रत्युत्तर में हमें किस तरह की तैयारी रखनी है ताकि उसमें भी हम उसे पस्त कर सकें। निश्चित रूप से सैन्य रणनीतिकारों ने अपनी पूरी स्थिति से अवगत कराते हुए उन्हें आश्वस्त किया होगा या फिर उनकी जो आवश्यकता होगी उसके बारे में बात की होगी।

सरकार यानी राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका साहसपूर्वक निर्णय करने के साथ सेना को करवाई और रणनीति की संपूर्ण स्वतंत्रता देना तथा अपने व्यवहार एवं कदमों से आश्वस्त करना कि कार्रवाई में किसी तरह की आवश्यकता में कमी नहीं होगी। कहने का तात्पर्य कि पाकिस्तान की सैन्य प्रतिक्रियाओं का उत्तर हमारी सेना दे रही थी। यह भी सच है कि टकराव शुरू होने के बाद विदेश के प्रमुख नेताओं ने राजनीतिक नेतृत्व से ही संपर्क किया होगा। सरकार की ओर से अमेरिकी उपराष्ट्रपति, विदेश मंत्री , राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार आदि ने कब-कब किसे कॉल किया इसका भी विवरण देश के सामने रखा जा चुका है। कहीं से ऐसा न एक संकेत है और न कोई कारण दिखता है जिससे डोनाल्ड ट्रंप युद्ध रोकने का दबाव बनाएं और भारत उसे स्वीकार कर ले। उनके भी वक्तव्य में क्या है? .. हमने दोनों देशों को समझाया 'उन्हें कहा कि आपके साथ पूरा ट्रेड करेंगे'.. दोनों देश के नेताओं ने बुद्धिमता का परिचय दिया' हमने दो न्यूक्लियर यानी नाभिकीय संपन्न देशों के बीच नाभिकीय टकराव रोका आदि आदी। इसी में एक जगह उन्होंने किसी तटस्थ स्थान पर मध्यस्थता में बातचीत कराने का भी वक्तव्य दे दिया। यह बात अलग है कि अपनी मध्य पूर्व यात्रा के दौरान उन्होंने बोल दिया कि हमने कोई मध्यस्थता नहीं की। सामान्य तौर पर भी जिन्होंने भारत के वक्तव्यों पर ध्यान दिया होगा उन्हें स्पष्ट है कि हमारे स्टैंड में किंचित भी अस्पष्टता नहीं थी। 10 मई को ही भारत ने साफ कर दिया कि किसी तरह की आतंकवादी घटना युद्ध मानी जाएगी। दूसरे, प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र के नाम संबोधन, फिर आदमपुर और बीकानेर के भाषणों में एक-एक बिंदु रख दिया कि आतंकवाद और बातचीत, व्यापार और आतंकवाद नहीं चलेगा। यहां तक कि पानी और खून भी एक साथ नहीं बहेगा। यह भी कहा कि अब अगर आतंकवादी घटना हुई तो सेना को सीधा नुकसान उठाना पड़ेगा। हम इसे केवल आतंकवादियों की नहीं मानकर पाकिस्तान सरकार और सेना की कार्रवाई मानेंगे और उसी प्रकार प्रत्युत्तर देंगे। सबसे बढ़कर पाकिस्तान से बातचीत होगी तो केवल पाक अधिकृत कश्मीर पर।

बावजूद आप लगातार प्रश्न उठा रहे हैं तो इसे भारत या सेना का कतई समर्थन नहीं कहा जाएगा। यह सेना व देश दोनों का विरोध है। विडंबना देखिए कि अमेरिका भी नहीं कह रहा है कि हमने दबाव डालकर युद्धविराम कराया या रुकवाया, मध्यस्थता शब्द भी कहीं से नहीं आ रहा। अमेरिका गए प्रतिनिधिमंडल को भी ट्रंप प्रशासन के लोगों ने ऐसा नहीं कहा, हमारा दुश्मन और पाकिस्तान का समर्थन करने वाला चीन तक नहीं कह रहा कि भारत ने दबाव में युद्ध रोका और भारत-पाक के बीच बातचीत होगी। अब देश को पूछना चाहिए कि राहुल गांधी, खड़गे, जयराम रमेश ,अखिलेश यादव आदि को यह जानकारी कहां से मिल गई? दूसरे, अगर हमारी सेना ने वीरतापूर्वक पाकिस्तान को पस्त किया तो फिर आप युद्ध में क्षति का प्रश्न किससे पूछ रहे हैं? जब आप किसी सैन्यबल वाले शत्रु देश को सबक सिखाने गए हैं तो माना गया होगा कि हमारी भी क्षति हो सकती है। भारी क्षति उठाकर भी सबक सिखाने की मानसिक तैयारी से ही कार्रवाई हुई होगी। युद्ध में क्षति हुई या विमान ही नष्ट हो गये तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। क्या आतंक विरोधी युद्ध में अमेरिका और नाटो को सैनिक क्षति नहीं हुई? क्या छोटे से गाजा के विरुद्ध कार्रवाई में इजराइल को कोई क्षति नहीं हुई? क्या यूक्रेन के साथ युद्ध में रुस को क्षति नहीं हुई ? ऐसी कौन सी सैन्य करवाई है जिसमें क्षति नहीं होगी? क्या कांग्रेस के शासनकाल में 1971 की विजय में भी भारत को सैन्य सामग्रियों के अलावा जवानों के संदर्भ में क्षति नहीं हुई? क्या1965 का युद्ध बिना क्षति के हुई? 1962 के भारत चीन युद्ध में तो ऐसी क्षति हुई जिसकी चर्चा तक में आज भी शर्म आती है।आप अपनी संकुचित राजनीति के लिए नरेंद्र मोदी सरकार को पराजित या छोटा दिखाने के हल्ला बोल अभियान में सीधे-सीधे देश और सेना को छोटा दिखा रहे हैं। आपको अगर पाकिस्तान जैसे शत्रु से सुरक्षित होना है तो हर स्तर पर अपनी क्षति उठाने, बलिदान देने के लिए भी तैयार रहना होगा। यह संभव नहीं कि आप कार्रवाई करेंगे और प्रत्युत्तर न मिले तथा कोई क्षति नहीं हो। मुख्य बात यह होती है कि हमारी क्षति और हमारे बलिदान का पूरा मूल्य हमें प्राप्त हुआ या नहीं। इस मायने में देखें तो जैसी कार्रवाई भारत ने की, जिस ढंग का प्रत्युत्तर दिया संपूर्ण विश्व में उसका लोहा माना गया और हमारे स्वदेशी तकनीक से निर्मित हथियारों की मांग पूरी दुनिया में बढ़ी है।

देखते ही देखते आखिर राजनीति ऐसी कैसी हो गई ?

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

लोकतंत्र की राजनीति में नीति और सिद्धांतों पर आधारित व्यापक जनहित के प्रति समर्पित भूमिका का निर्वहन किया जाता है। सैद्धांतिक रूप से सेवा और समर्पण के भाव के चलते ही सक्रिय राजनीति में प्रवत्त हुआ जाता है। इस भूमिका के बदले किसी भी प्रकार का कोई प्रतिफल नहीं मिला करता। सक्रिय राजनीति में रुझान के चलते अनेक नेता एवं कार्यकर्ता अपने व्यापार व्यवसाय को चौपट कर बैठते हैं। हालांकि जो जनप्रतिनिधि होते हैं और किसी पद पर आरूढ़ होते है, उन्हें उनकी सेवाओं के बदले सम्मान स्वरूप कुछ प्रतिफल दिया जाता है तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती है।

लेकिन यह इतनी अल्प होती है कि आजकल के महंगाई के जमाने में प्राप्त धनराशि से अपने और अपने परिवार का जीविकोपार्जन लगभग संभव नहीं होता। इस जानकारी के चलते मन के किसी कोने में यह भावना घर कर गई थी कि धन्य है राजनेता! जो पराई पीर को अपनी पीर समझते हैं। अन्यथा आजकल के जमाने में कौन किसी की चिंता करता है ? आजकल भाइयों में भाईचारा नहीं है, परिवार में एका नहीं है, पुत्र, पुत्र धर्म का कितना निर्वहन करेगा? इसकी कोई गारंटी नहीं है। और तो और कब किसी का रक्षक ही भक्षक बन जाए?, इसके बारे में तो कुछ कहा ही नहीं जा सकता।

ऐसे परिवेश में तमाम छोटे बड़े जन सेवा को समर्पित राजनेता मुझे 'ईश्वरीय अवतार' से कमतर नजर नहीं आते थे। लेकिन आजकल स्वर्णिम भविष्य की परिकल्पना को साकार करने के लिए राजनीति के प्रति सामाजिक परिवेश में गहरा रुझान देखा जा रहा है। ऐसा कतई नहीं है कि जन सेवा की भावना किसी के हृदय में हिलौरें मारने लगी हो। दरअसल इन दिनों राजनीति में अनंतानंत संभावनाओं के द्वार खुल गए हैं। कुछ एक के लिए संभावनाओं की ऐसी सुरंग भी बन चुकी है, जिसका पता आम नागरिक को चल ही नहीं पाता। कब, कौन, कहां से ,किस प्रकार का दांव खेल जाए, कभी-कभी तो राजनीति के शातिर खिलाड़ी भी इसको समझ नहीं पाते।

यह तो आपकी बुद्धि कौशल पर निर्भर करता है कि आप अपनी आर्थिक सेहत का कितना ख्याल रख पाते हैं। आजकल की राजनीति कोई बच्चों का खेल नहीं रह गई है। राजनीति के मैदान में एक से बढ़कर एक खिलाड़ी पाए जाते हैं। वैसे एक बात जरुर देखने आती है कि इन दिनों राजनीति के तमाम छोटे बड़े खिलाड़ी देश प्रदेश के नवनिर्माण की दिशा में दृढ़ संकल्पित दिखाई देते हैं। आजकल अधिकांश पद पर बैठे नेताओं पर अकर्मण्यता का आरोप तो लगाया ही नहीं जा सकता। दरअसल वे जानते हैं कि काम होगा, चलता दिखाई देगा और किया गया काम उनकी सक्रियता का स्पष्ट तौर पर परिचय देगा। तब ही तो कहीं जाकर दो पैसा (?) हाथ में आएगा।

वह जमाना और था जब कुछ एक राजनेता तो कुछ भी नहीं किया करते थे, केवल और केवल राजनीति करना ही उनका राजनीतिक धर्म था। लेकिन जब से सत्ता इधर से उधर और उधर से इधर होने लग गई। लोकतंत्र की परंपरा के अनुरूप कभी इनको तो कभी उनको भरपूर मौका मिलने गया। आजकल तो हर बड़े काम या अभियान में कुछ इधर के और कुछ उधर के मिलकर अपनी योजनाओं को अंजाम देने लगे हैं। ऐसी स्थिति में चित्त हो या पट, बाजी इन्हीं के हाथ में रहा करती है। अब यदि जागृत मतदाता राजनीति में किसी प्रकार का बड़ा फेरबदल कर भी दे तो, 'साझेदारी धर्म' का निर्वाह हो जाता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अब दो जून की नहीं, डिजिटल रोटी कहिए जनाब!

व्यंग्य

संजीव शर्मा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

वक्त बदल गया है और उसके साथ बदल गई है हमारी दो जून की रोटी। कभी वह गोल, मुलायम, माँ के हाथ की थी, जिसकी खुशबू से पेट के साथ-साथ तन मन भी भर जाता था। लेकिन अब तो रोटी भी स्टार्टअप हो गई है। पहले रोटी केवल रोटी थी, अब वह ग्लूटेन-फ्री, कीटो-फ्रेंडली, ऑर्गेनिक, मल्टीग्रेन, प्रोटीन-लोडेड हो गई है। बाजार में अब एक रोटी के साथ इतने टैग लगे होते हैं कि लगता है, ये खाने की चीज कम, इंस्टाग्राम की रील ज्यादा है। पहले माँ प्यार से पुचकारती थी कि रोटी खा लो, ठंडी हो जाएगी लेकिन अब रोटी खुद बताती है कि मुझे माइक्रोवेव में गरम करो, वरना मज़ा नहीं आएगा।

और अब रोटी दो जून वाली नहीं रही बल्कि कीमती हो गई है। अब दो जून की रोटी कमाने के लिए अब चार पहर काम करना पड़ता है। पहले रोटी गेहूँ खेत से आए घर के गेहूं से बनती थी, अब रोटी सुपरमार्केट से आती है, और उसका दाम सुनकर लगता है जैसे रोटी गेहूँ की नहीं, सोने से बनी है। एक रोटी की कीमत में पहले पूरी थाली आ जाती थी मतलब दाल, चावल, सब्जी, और ऊपर से पापड़ अचार और सलाद फ्री। अब भरपेट रोटी ही मिल जाए तो बहुत है। अब समय खाली पेट भरने का नहीं है बल्कि हेल्थ कॉन्शस भोजन का है इसलिए रोटी को अब कैलोरी काउंटर के साथ परोसा जाता है। पहले परिवार के बुजुर्ग कहते थे भरपेट रोटी खाने से ताकत मिलती है और अब नए जमाने के फिटनेस ट्रेनर कहते है कि रोटी खाओगे तो फैट बढ़ जाएगा। पहले रोटी हाजमा दुरुस्त रखती थी लेकिन अब पाचन तंत्र की दुश्मन बन गई है। बेचारी रोटी, जो कभी परिवार के प्यार का प्रतीक थी, अब विलेन बन गई। अब गेहूं की रोटी ज्वार, बाजरा, रागी के साथ नए नए अवतार ले रही है। लेकिन इसके लिए स्वाद भूलना होगा क्योंकि वो तो जैसे गेहूं की रोटी के साथ ही छुट्टी पर चला गया है। अब रोटी भी डिजिटल हो गई है। ऑनलाइन ऑर्डर करो, मिनटों में डिलीवरी। लेकिन 8 मिनट में डिलीवरी की जल्दबाजी में रोटी गोल नहीं, त्रिकोण भी हो जाती है। कभी-कभी तो लगता है, रोटी नहीं, नक्शा डिलीवर हुआ है। और ऊपर से टैक्स अलग। जीएसटी, सर्विस चार्ज, डिलीवरी फी, प्लेटफार्म फीस, रेन चार्ज और टिप वगैरह मतलब रोटी खाने से पहले जेब खाली। अब दो जून की रोटी सिर्फ पेट की भूख नहीं मिटाती, वो जेब, दिमाग और धैर्य की भी परीक्षा लेती है। पहले रोटी बनाना कला थी, अब रोटी खाना कमाना और खाना कला है। पता नहीं, माँ की वो गोल, गरम और मनुहार वाली स्वादिष्ट रोटी फिर कब लौट कर आएगी से लौट कर आएगी तब तक ये नए जमाने की डिजिटल और मिलावटी रोटी हमें दो जून में नहीं महीने भर की कमाई में ही नसीब होती रहेगी।

वैसे, भारतीय संस्कृति की आत्मा और रसोई की शान हमारी प्रिय रोटी सिर्फ भोजन नहीं, बल्कि इतिहास, संस्कृति और मेहनत का प्रतीक है। तभी तो दो जून की रोटी जैसे लोकप्रिय मुहावरों ने जन्म लिया। बताया जाता है कि रोटी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव सभ्यता का विकास। रोटी का इतिहास करीब 10,000 साल पुराना माना जाता है, जब मानव ने खेती शुरू की थी। सिंधु घाटी सभ्यता में भी गेहूँ और जौ की खेती के सबूत मिलते हैं। पुरातात्विक खुदाई में रोटी बनाने के लिए तवे और चूल्हे जैसे उपकरण मिले हैं। वैदिक काल में भी रोटियों का विभिन्न नामों से जिक्र मिलता है। मध्यकाल में बदलाव के साथ साथ रोटी भी क्षेत्रीय रंग में रंगती गई । उत्तर भारत में गेहूँ की रोटी, दक्षिण में चावल की रोटी और पश्चिम में बाजरे की भाखरी ने भारतीय खान पान में अपनी अमिट जगह बना ली थी। मुगलकाल में नान और पराठे जैसे व्यंजनों ने रोटी को शाही गरिमा प्रदान कर दी । तंदूर का आविष्कार भी इस दौर की देन माना जाता है जिसने फिर नान और तंदूरी रोटी को जन्म दिया। मसाले, घी और मेवों के साथ रूमाली, शीरमाल और कुलचा जैसे परिवर्तित रूप में रोटी सिर्फ भोजन नहीं, बल्कि उत्सव का हिस्सा बनती गई।

ब्रिटिश काल में रोटी सिर्फ भोजन या पेट भरने का माध्यम नहीं, बल्कि आजादी की प्रतीक बन गई थी। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में रोटी और कमल ने गांव गांव में आजादी की अलख जगाने में अहम भूमिका निभाई। यह रोटी की सामाजिक-राजनीतिक ताकत को दर्शाता है। अब मौजूदा दौर में रोटी ने नए-नए रूप धर लिए हैं। गेहूँ के साथ ज्वार, बाजरा, मक्का और रागी जैसी फसलों ने क्षेत्रीय स्वाद को बढ़ावा दिया। मसलन पंजाब की मक्के की रोटी, राजस्थान की बाजरे की रोटी और दक्षिण भारत की रागी रोटी ने पोषण और स्वाद का अनूठा मेल पेश किया और यह राज्यों की सीमाओं को पार कर देशव्यापी हो गई। इसी तरह स्वतंत्र भारत में हरित क्रांति ने गेहूँ और रोटी हर घर की थाली में स्थायी जगह दे दी। अब रोटी ने वैश्वीकरण की राह पकड़ ली है।

ग्लूटेन-फ्री, कीटो और मल्टीग्रेन रोटियाँ स्वास्थ्य के प्रति जागरूक पीढ़ी की पसंद बन रही हैं लेकिन आम लोगों की हैसियत से दूर होती जा रहीं हैं। रोटी अब सिर्फ घर की रसोई तक सीमित नहीं है बल्कि यह रेस्तराँ के मेन्यू, ऑनलाइन डिलीवरी और यहाँ तक कि प्री-पैकेज्ड रूप में सुपर मार्केट में आन बान और शान से उपलब्ध है। फिर भी, माँ के हाथ की रोटी का स्वाद अब भी अतुलनीय है। हमारे देश में रोटी सिर्फ भोजन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। रोटी, कपड़ा और मकान जीवन की बुनियादी जरूरतों का पर्याय है। रोटी मेहनत, सादगी और एकजुटता का भी प्रतीक है। रोटी का इतिहास उतना ही समृद्ध और विविध है जितना भारत स्वयं। खेतों से लेकर तंदूर तक, गाँव की चूल्हों से लेकर मॉडर्न किचन तक, रोटी ने हर दौर में अपनी जगह बनाई। यह सिर्फ पेट नहीं, बल्कि दिलों को भी जोड़ती है। चाहे वह सादी चपाती हो या मसालेदार पराठा, रोटी हमारी संस्कृति की थाली में हमेशा गरम रहेगी।

जल संरक्षण

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

लेखक स्तंभकार हैं।

दूरगामी सोच का परिणाम है वंदे गंगा जन अभियान

जल है तो कल है कि चुनौती के बीच राजस्थान की भजन लाल सरकार द्वारा समूचे प्रदेश में मानसून से पूर्व 5 जून से 20 जून तक वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि राजस्थान सहित पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, दादरा-नगर हवेली और दमन दीव देष के ऐसे राज्य या केन्द्र शासित प्रदेश है जहां भूजल की निकासी भूजल के पुनर्भरण से कहीं अधिक हो रही है। अगर राजस्थान ही की बात करें और वह भी शुद्ध पेयजल की बात की जाए तो पीने योग्य पानी और उसकी उपलब्धता में 30 फीसदी का अंतर है। 30 प्रतिशत का अंतर कोई छोटा मोटा अंतर नहीं है ऐसे में इसे भलीभांति समझा जा सकता है कि राज्य सरकार को नागरिकों के लिए पीने के शुद्ध पानी की उपलब्धता बनाये रखने की चुनौती से कैसे दो-चार होना पड़ता होगा। वास्तव में यह गंभीर समस्या है। समूचे विश्व में पानी की उपलब्धता का संकट है। यदि हम भारत की ही बात करें तो 1950 में जहां प्रतिव्यक्ति सालाना 5200 घनमीटर पानी की उपलब्धता थी वह 2024 आते आते 1401 घनमीटर रह गई है और यदि विशेषज्ञों की माने तो 2050 तक यह उपलब्धता 1191 घनमीटर ही रह जाने की संभावना हो गई है। यही कारण है प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों कहा कि हमें पानी के उपयोग के संदर्भ में कम करें, पुनः उपयोग करें और पुनः चक्रित करने की नीति पर चलना होगा। देश में जल के पुनर्भरण में लगातार कमी आ रही है। प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में आज भारत 182 वें स्थान पर आ गया है। भूजल की उपलब्धता को देखा जाए तो 1950 से 2024 के दौरान 73 प्रतिशत की कमी आ गई है। दिल्ली, चैन्नई, पुणे, हैदराबाद, मुंबई सहित देश के अनेक छोटे बड़े शहर पेयजल की गंभीर समस्या से जुझ रहे हैं।

विश्वव्यापी जल संकट को देखते हुए राजस्थान की भजन लाल सरकार की इस पहल को महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। दरअसल देश में उपलब्ध भूजल का 87 प्रतिशत उपयोग खेती किसानी में होता है तो 11.7 प्रतिशत उपयोग घरेलू कार्यों और लगभग 2 प्रतिशत उपयोग ही औद्योगिक क्षेत्र में होता है। संकट का बड़ा कारण परंपरागत जल संग्रहण स्रोतों का नष्ट होना, उनमें अवरोध होना, बढ़ती आबादी और शहरी क्षेत्र में आबादी का घनत्व बढ़ने के साथ ही अत्यधिक पानी की आवश्यकता वाली उपज को बढ़ावा देने से जल दोहन अधिक होने लगा है। सीवेज के कारण पानी का अत्यधिक उपयोग, बरसाती जल का प्रोपर संग्रहण नहीं होना, जंगलों का कांक्रीट के जंगलों में बदलना और पानी के अन्य कार्यों में भी अत्यधिक उपयोग से पानी का संकट दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अनियमित बरसात और बरसाती चक्र में बदलाव को भी एक कारण माना जा सकता है। आज जितने पानी के पीने के लिए आवश्यकता होती है उससे कई गुणा अधिक पानी फ्लस करने, वाहनों की धुलाई, पौधों के रखरखाव व अन्य कार्यों में होने लगा है। सीमेंट, लोहा, जस्ता और अब एमसेंड आदि उद्योगों के लिए भी अधिक पानी की आवश्यकता होने लगी है। एक समय था जब सावन भादो में बरसात की झड़ी लगती थी और कई दिनों तक सूर्य देवता के दर्शन नहीं होते थे तो उस झड़ी का पानी सीधे जमीन में जाता था और वह प्राकृतिक वाटर हार्वेस्टिंग का सिस्टम होता था। सड़कों के साथ साथ ढ़लान क्षेत्र होता था और वहां एकत्रित पानी क्षेत्र में जल स्तर बढ़ाने के साथ ही पशुओं के पीने के काम भी आ जाता था। राजस्थान में रेगिस्तानी इलाकों में टांके आदि परंपरागत जल संग्रहण के साधन होते थे आज हम इन्हें भूलते जा रहे हैं। ऐसा नहीं है कि गिरते भूजल स्तर और जल संग्रहण को लेकर सरकार गंभीर ना हो। बल्कि कहना तो यह होगा कि सरकार अत्यधिक गंभीर होने के बावजूद जो परिणाम आने चाहिए वह प्राप्त नहीं हो सके हैं। इसका एक प्रमुख कारण दूरगामी सोच के साथ नीति और क्रियान्वयन का ना होना भी है। सरकार द्वारा वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम सरकार स्तर पर बड़े स्तर पर बनाने और निजी मल्टी स्टोरिज व सरकार गैरसरकारी संस्थानों में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाने पर जोर और बनाये जाने के बावजूद उनकी गुणवत्ता को लेकर सवाल इसलिए उठते रहते हैं कि ना तो रखरखाव पर ध्यान दिया जाता है और ना ही पानी के बहाव का पूरा ध्यान देने के कारण यह अपने उद्देश्यों पर खरे नहीं उतरे हैं।

विश्वव्यापी जल संकट को देखते हुए राजस्थान की भजन लाल सरकार की इस पहल को महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। दरअसल देश में उपलब्ध भूजल का 87 प्रतिशत उपयोग खेती किसानी में होता है तो 11.7 प्रतिशत उपयोग घरेलू कार्यों और लगभग 2 प्रतिशत उपयोग ही औद्योगिक क्षेत्र में होता है। संकट का बड़ा कारण परंपरागत जल संग्रहण स्रोतों का नष्ट होना, उनमें अवरोध होना, बढ़ती आबादी और शहरी क्षेत्र में आबादी का घनत्व बढ़ने के साथ ही अत्यधिक पानी की आवश्यकता वाली उपज को बढ़ावा देने से जल दोहन अधिक होने लगा है।

ऐसा नहीं है कि इन हालातों से सरकार अनजान हो यहीं कारण है कि राजस्थान की भजन लाल सरकार ने मानसून के ठीक पहले पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून से 20 जून तक समूचे प्रदेश में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान संचालित कर रही है। सबसे अच्छी बात यह है कि इस अभियान में जनभागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया गया है और स्वयं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक प्रमुख समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका की मुहिम पर रामगढ़ में श्रमदान में हिस्सा लेकर आमजन को संदेश दिया है। राज्य सरकार द्वारा समूचे प्रदेश में इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। अभियान के दौरान जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार, जल प्रदूषण में कमी, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता, भूजल पुनर्भरण, व्यवहार परिवर्तन से बेहतर जल उपयोग और व्यापक स्तर पर पौधारोपण के हरियालो राजस्थान की तैयारी आरंभ की है। रामगढ़ राजस्थान की राजधानी जयपुर की किसी जमाने में पेयजल की उपलब्धता के लिए जीवन रेखा माना जाता था और 1982 के एशियाड़ की नौकायन प्रतियोगिता के बाद इसके बहाव क्षेत्र में अतिक्रमणों का जो ग्रहण लगा वह इसे सूखे मैदान में बदल कर रख दिया है। पिछले लंबे समय से रामगढ़ को पुनर्जीवित करने की मुहिम चल रही है लगता है सरकार ने यहां वैकल्पिक स्रोत से पानी लाने की जो योजना बनाई है और समग्र प्रयासों से परंपरागत पानी के अवरुद्ध रास्ते चलने लगते हैं तो रामगढ़ को नया जीवन मिल सकेगा। रामगढ़ तो एक उदाहरण मात्र है देश व प्रदेश में ऐसे हजारों की संख्या में जल संग्रहण स्रोत है जो अतिक्रमणों व शहरीकरण की भेंट चढ़ रहे हैं। शहरीकरण के विस्तार के समय यदि परंपरागत जल बहाव क्षेत्रों से छेड़छाड़ नहीं की जाए तो हालात इतने अधिक नहीं बिगड़े पर पैसा कमाने का लालच हमारें आने वाली पीढ़ी के लिए संकट लाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने पाणी रो मान राखो-जीवण रो ध्यान राखो समयानुकूल संदेश दिया है। सरकार की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि सभी मंत्रियों और प्रभारी सचिवों को इस कार्य की जिम्मेदारी सौंपी गई है।स्वयं मुख्यमंत्री श्रमदान कर रहे हैं। निश्चित रुप से इससे अवेयरनेस तो आयेगी ही जनभागीदारी भी बढ़ेगी। देश के सभी राज्यों में इस तरह के अभियान चलाये जाने चाहिए। भले ही आज कुछ राज्यों में पानी का संकट दिखाई नहीं दे रहा हो पर पानी की बचत और भूजल के संग्रहण के प्रति हमें गंभीर होना ही होगा। पानी के पुनः उपयोग और पेयजल के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए पुनःचक्रिकृत पानी के उपयोग को आदत बनाना होगा। हांलाकि पानी के पुनःचक्रिकरण के लिए अभी व्यापक स्तर पर काम करने की आवश्यकता है। सरकार को प्राथमिकता से एसटीपी बनाने होंगे और इस तरह के पानी का उपयोग बढ़ाना ही होगा। भूजल के संग्रहण और भूजल के दोहन के बीच समन्वय बनाना होगा नहीं तो आने वाला समय बहुत अधिक चिंतनीय और गंभीर होगा, इसमें किसी तरह का संदेह नहीं होना चाहिए। सही मायने में कहा जाए तो वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान सरकार की दूरगामी सोच का जनहितेषी कार्यक्रम माना जाना चाहिए क्योंकि सरकार की समझ और गंभीरता को इसीसे से समझा जा सकता है कि कार्यक्रम को आमजन से जोड़ने के लिए ही जनअभियान नाम दिया गया है।

पर्यावरण

संध्या राजपुरोहित

औपचारिकता नहीं, संकल्प और साधना बने

हर वर्ष 5 जून को हम 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाते हैं। इस दिन देश और दुनिया के कोने-कोने में पौधारोपण, रैली, पोस्टर प्रतियोगिता, भाषण और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। सोशल मीडिया पर 'सेव अर्थ' और 'गो ग्रीन' जैसे हैशटैग ट्रेंड करते हैं, और पर्यावरण के प्रति भावनात्मक अपील से भरपूर पोस्ट साझा की जाती हैं। और हर तरफ एक दिन के लिए 'हरियाली' की लहर दौड़ जाती है। परंतु एक सवाल बार-बार उठता है- क्या यह सब कुछ वास्तव में हमारे पर्यावरण की रक्षा कर रहा है? या यह दिन केवल एक प्रतीकात्मकता और औपचारिकता बनकर रह गया है?

भारत में हर वर्ष लाखों/ करोड़ों पौधे लगाए जाते हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश उनमें से केवल 20 से 30 प्रतिशत ही जीवित रह पाते हैं। पौधारोपण के बाद उनकी देखभाल नहीं होती, पानी नहीं मिलता, पशु उन्हें नुकसान पहुँचा देते हैं, या वे पालन पोषण के अभाव में सूख जाते हैं। एक ओर हम पर्यावरण संरक्षण का दावा करते हैं, और दूसरी ओर वे पौधे जिन्हें हमने भविष्य की हरियाली का प्रतीक मानकर लगाया था, चुपचाप दम तोड़ देते हैं। यह विरोधाभास बताता है कि हमारी नीयत में तो कमी नहीं, लेकिन हमारी कार्यशैली में स्थायित्व और ईमानदारी की कमी जरूर है। लेकिन क्या पर्यावरण संरक्षण का कार्य एक दिन की चकाचौंध में पूरा हो सकता है? क्या यह महज़ एक प्रतीकात्मक उत्सव बनकर रह गया है, जहाँ भावनाएँ तो जगती हैं, पर व्यवहारिक परिवर्तन नहीं दिखता? यही प्रश्न हमें आत्ममंथन की ओर ले जाता है।

आज आवश्यकता है कि हम पर्यावरण दिवस को केवल एक दिन की रस्म न मानें, बल्कि इसे जीवन का स्थायी संकल्प बनाएं। जब तक यह सोच नहीं बदलती, तब तक लाखों पौधे लगाने की कवायद भी व्यर्थ है। यदि हम एक साल में केवल एक पौधा लगाएं और उसे दस वर्षों तक पोषण देकर वृक्ष बनने दें, तो उसका पर्यावरण पर जो सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, वह अनगिनत औपचारिक पौधारोपण कार्यक्रमों से कहीं अधिक होगा।

भारत की जनसंख्या लगभग 140 करोड़ है। यदि इस विशाल जनसंख्या का केवल 10 प्रतिशत भी यह संकल्प लें कि वह प्रतिवर्ष एक पौधा लगाएगा और उसकी देखभाल करेगा, तो हर वर्ष 14 करोड़ पौधे लगेंगे। दस वर्षों में यह संख्या 140 करोड़ पेड़ों की हो जाएगी। यह कोई भावनात्मक कल्पना नहीं, बल्कि व्यावहारिक गणना है। एक परिपक्व वृक्ष सालाना लगभग 100 किलोग्राम ऑक्सीजन देता है, 20 किलो से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करता है, और लगभग 25 टन तक जल संरक्षण में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त वह सैकड़ों जीवों को आश्रय और भोजन देता है। इस प्रकार एक वृक्ष केवल हरियाली का प्रतीक नहीं होता, बल्कि एक जीवित पारिस्थितिकी तंत्र होता है।

दुर्भाग्यवश, आज पर्यावरणीय संकट केवल किताबों या समाचारों की सुर्खियाँ नहीं रहे, बल्कि हमारे रोज़मर्रा जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। तापमान में निरंतर वृद्धि, जल स्रोतों का सूखना, बाढ़, सूखा, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, और जैव विविधता का क्षरण ये सब संकेत हैं कि हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC) की रिपोर्ट के अनुसार औद्योगिक युग की तुलना में वैश्विक तापमान में 1.2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो चुकी है। यदि यह 2 डिग्री तक बढ़ा, तो हिमालय के 75 प्रतिशत से अधिक ग्लेशियर 2100 तक पिघल सकते हैं। यह केवल हिमालय का संकट नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आजीविका, जल आपूर्ति और पारिस्थितिकी पर संकट है।

वनों की स्थिति भी संतोषजनक नहीं है। भारत की राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार कुल भूभाग का 33 प्रतिशत वनाच्छादित होना चाहिए, परंतु वर्तमान में यह आंकड़ा केवल 21.71 प्रतिशत है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष औसतन 25,000 हेक्टेयर से अधिक वन क्षेत्र को विकास परियोजनाओं के नाम पर काटा जा रहा है। क्या विकास का अर्थ केवल कंक्रीट के जंगल हैं? क्या हम भूल गए हैं कि प्रकृति के बिना प्रगति एक भ्रम है?

पानी की बात करें तो नीति आयोग की रिपोर्ट 2021 के अनुसार भारत के 80 प्रतिशत भूजल स्रोत खतरनाक स्तर तक नीचे जा चुके हैं। 2030 तक देश की 40 प्रतिशत आबादी को पीने योग्य जल प्राप्त होना कठिन हो सकता है। जलवायु परिवर्तन और जल संकट का यह संयुक्त प्रभाव हमारे खाद्य उत्पादन, स्वास्थ्य और रोजगार पर भी पड़ेगा।

इस गहराते संकट के बीच जब हम पर्यावरण दिवस मनाते हैं, तो यह केवल एक दिन की औपचारिकता नहीं, बल्कि एक चेतावनी बन जानी चाहिए। अब समय आ गया है जब हमें यह स्वीकारना होगा कि विकास और पर्यावरण को टकराव के रूप में नहीं, बल्कि साझेदारी के रूप में देखना होगा। यदि हम हर विकास परियोजना में पर्यावरणीय संतुलन को प्राथमिकता दें, तो यह संघर्ष नहीं, सह-अस्तित्व का रास्ता बन सकता है। जापान जैसे देशों में हर निर्माण परियोजना में पर्यावरण संरक्षण की योजना पहले बनाई जाती है। चीन में प्रत्येक निर्माण परियोजना में 20 प्रतिशत हरियाली का प्रावधान अनिवार्य है। हमें भी ऐसी ही नीति अपनानी होगी।

पर्यावरण की रक्षा केवल सरकारों, संस्थाओं या संगठनों की ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि हर नागरिक की जिम्मेदारी है। हर व्यक्ति के छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़ा बदलाव ला सकते हैं। यदि हम अपने घर, मोहल्ले और स्कूलों में छोटे-छोटे कार्य जैसे जल बचत, प्लास्टिक का कम उपयोग, घरेलू कचरे का पृथक्करण, और वृक्षों की देखभाल करना आरंभ करें, तो बड़ा परिणाम मिलेगा। एक अध्ययन के अनुसार भारत में प्रत्येक व्यक्ति सालाना औसतन 11 किलो प्लास्टिक कचरा छोड़ता है। यदि हम केवल कपड़े के थैले, पुनः प्रयोज्य बोतलों और प्लास्टिक रहित जीवनशैली को अपनाएं, तो यह संख्या काफी कम हो सकती है।

बच्चों को बचपन से ही प्रकृति के प्रति प्रेम और सेवा का भाव देना आवश्यक है। आज के बच्चे तकनीक से तो जुड़ रहे हैं, लेकिन प्रकृति से कटते जा रहे हैं। उन्हें मिट्टी, पौधे, पशु-पक्षियों से जुड़ने के अवसर देना ज़रूरी है। स्कूलों में 'वृक्ष मित्र योजना', 'पौधा गोद योजना' जैसी पहलकदमियों के माध्यम से यह शिक्षा दी जा सकती है। शोध बताते हैं कि जो बच्चे प्रकृति के संपर्क में रहते हैं, उनमें मानसिक तनाव कम होता है, रचनात्मकता अधिक होती है और सामाजिक व्यवहार बेहतर होता है।

समाज और संस्थाओं को भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। पंचायतें और नगर पालिकाएँ कम से कम वर्ष में एक बार हरित अभियान चलाएं। कंपनियाँ अपनी कॉर्पोरेट सामाजिक ज़िम्मेदारी (CSR) में पर्यावरण को प्राथमिकता दें। धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन पर्यावरण अनुकूल बनें। मीडिया न केवल समस्याओं को उजागर करे, बल्कि समाधान और प्रेरक कहानियों को भी प्रमुखता दे।

भारत में ऐसे अनेक प्रेरणास्रोत हैं जिन्होंने अकेले ही बड़ा बदलाव कर दिखाया। कर्नाटक की सालूमरदा थिमक्का ने अकेले 4,000 से अधिक पेड़ लगाए और उन्हें अपने बच्चों की तरह पाला। असम के जादव पायेंग ने अकेले ही ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर 550 हेक्टेयर का जंगल खड़ा कर दिया। राजस्थान के राजेन्द्र सिंह ने जल संरक्षण के माध्यम से सैकड़ों सूखी नदियों को पुनर्जीवित किया। ये उदाहरण बताते हैं कि संकल्प अगर सच्चा हो, तो एक व्यक्ति भी दुनिया बदल सकता है।

इसलिए इस पर्यावरण दिवस पर यह प्रण लें कि हम केवल 10 पौधे लगाकर फोटो खिंचवाने की परंपरा का पालन नहीं करेंगे, बल्कि एक पौधा लगाएंगे और उसे कम-से-कम 10 वर्षों तक संभालेंगे। जब वह वृक्ष बनकर छाया देगा, पक्षियों का बसेरा बनेगा, जल-संरक्षण करेगा और वातावरण को शुद्ध करेगा, तब जाकर हमारा संकल्प सफल कहलाएगा।

वास्तविक पर्यावरण सेवा वह नहीं जो केवल दिखावे के लिए हो, बल्कि वह है जो धैर्य, संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता से की जाए। जब हम पौधे को परिवार के सदस्य की तरह पालते हैं, तब वह केवल हरियाली नहीं, बल्कि जीवन की आशा बन जाता है।

अतः आइए, इस पर्यावरण दिवस से एक नया अध्याय शुरू करें। यह दिन केवल एक तिथि न रह जाए, बल्कि हमारी सोच, संस्कृति और जीवनशैली का हिस्सा बन जाए। हम सिर्फ कहें नहीं, करें। एक पौधा लगाएं, उसकी रक्षा करें, और आने वाली पीढ़ियों को एक हरी-भरी, स्वच्छ और सुरक्षित धरती सौंपें। यही हमारी सच्ची जिम्मेदारी है, यही पर्यावरण दिवस की सार्थकता है।

खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की चुनौती

'विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस' पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

खाद्य सुरक्षा को एक मानवाधिकार माना गया है, जिसके तहत सभी को सुरक्षित और पौष्टिक भोजन का उपभोग करने का अधिकार है। इसी के साथ खाद्य जनित बीमारियों के बोझ को कम करके खाद्य सुरक्षा के लिए वैश्विक प्रयासों को मजबूत करना भी अनिवार्य माना गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दूषित खानपान के कारण 200 से अधिक बीमारियां होती हैं और दुनियाभर में प्रतिवर्ष 10 में से 1 व्यक्ति दूषित भोजन के कारण बीमार पड़ता है। प्रतिवर्ष वायरस, बैक्टीरिया, परजीवी अथवा रासायनिक पदार्थों से दूषित भोजन खाने से करोड़ों लोग बीमार पड़ते हैं और लाखों लोग विभिन्न खाद्य जनित बीमारियों के शिकार होकर मर जाते हैं। अस्वास्थ्यकर भोजन के सेवन के कारण गरीबी से ग्रस्त तबके में बीमारियां होने का खतरा ज्यादा होता है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा खाद्य सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने और खाद्य जनित बीमारियों को रोकने के लिए कार्रवाई को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस की स्थापना की गई।

डब्ल्यूएचओ के अनुसार यह दिन सभी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में आने वाली चुनौतियों पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है, जिसमें सुरक्षित भोजन तक पहुंच की कमी, गरीबी और संघर्ष शामिल हैं। इस दिवस की स्थापना का उद्देश्य मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता को उजागर करना था। यह वैश्विक दिवस यह सुनिश्चित करने के प्रयासों को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण अवसर है कि मनुष्यों द्वारा खाया जाने वाला भोजन सुरक्षित है। लोगों के लिए यह जानना भी बहुत महत्वपूर्ण है कि कौनसे खाद्य पदार्थ सुरक्षित हैं और हमारे स्वास्थ्य को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं क्योंकि हमारा भोजन ही सुरक्षित नहीं होगा तो हमारा स्वास्थ्य कैसे अच्छा रहेगा?

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 20 दिसम्बर 2018 को 7 जून को विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस घोषित करने और सुरक्षित भोजन के बहुत सारे लाभों पर प्रकाश डालने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया था। उसके बाद संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की दो एजेंसियों खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोग से प्रतिवर्ष 7 जून को खाद्य सुरक्षा दिवस मनाया जाने लगा। 7 जून 2019 पहला खाद्य सुरक्षा दिवस 'खाद्य सुरक्षा, सभी का व्यवसाय' विषय के साथ मनाया गया था। 3 अगस्त 2020 को विश्व स्वास्थ्य सभा ने खाद्य सुरक्षा मुद्दों और दुनिया में आवश्यक कार्रवाइयों के बारे में एक प्रस्ताव पारित किया और हर साल 7 जून को विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस घोषित कर दिया गया। प्रतिवर्ष एक खास विषय के साथ मनाए जाने वाले इस दिवस के आयोजन का उद्देश्य वैश्विक, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर खाद्य जनित बीमारियों को रोकना तथा खाद्य सुरक्षा के लिए वैश्विक प्रयासों को मजबूत करना है। 2021 में विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस 'स्वस्थ कल के लिए आज सुरक्षित भोजन' विषय के साथ, 2022 में 'सुरक्षित भोजन, बेहतर स्वास्थ्य', 2023 में 'खाद्य मानक जीवन बचाते हैं' और 2024 में 'खाद्य सुरक्षाः अप्रत्याशित के लिए तैयार रहें' विषय के साथ मनाया गया था।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस 2025 का विषय है 'खाद्य सुरक्षाः क्रियाशील विज्ञान'। यह विषय सुरक्षित भोजन सुनिश्चित करने में वैज्ञानिक ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हुए इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे वैज्ञानिक साक्ष्य खाद्य सुरक्षा में प्रगति को आगे बढ़ाते हैं, विशेषज्ञ सलाह से लेकर निगरानी और वैश्विक सहयोग तक। यह विषय वैज्ञानिक ज्ञान को व्यवहार में लाने के महत्व को भी रेखांकित करते हुए इस बात पर जोर देता है कि भोजन तभी सुरक्षित हो सकता है, जब मार्गदर्शन और सलाह को अमल में लाया जाए। असुरक्षित भोजन कई निम्न और मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाओं के विकास को भी बाधित करता है, जिससे श्रमिकों की विकलांगता, बीमारी और असामयिक मृत्यु के कारण उत्पादकता में करीब 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर की हानि होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक खाद्य सुरक्षा को जलवायु संकट भी प्रभावित करता है और बढ़ता तापमान सुरक्षित खाद्य उत्पादन के लिए बड़ा खतरा बन रहा है। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि खाद्य सुरक्षा घटनाओं का प्रबंधन करने के लिए तैयार रहने के लिए नीति निर्माताओं, खाद्य सुरक्षा अधिकारियों, किसानों और खाद्य व्यवसाय संचालकों के समर्पित प्रयासों की आवश्यकता है और उपभोक्ता भी इसमें सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं। खाद्य सुरक्षा का अर्थ है खाद्य पदार्थों में सुरक्षित, स्वीकार्य स्तर के खतरों का अभाव, जो उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि खाद्य सुरक्षा हमारे समग्र स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के लिए सबसे महत्वपूर्ण है तथा सुरक्षित भोजन का सेवन अच्छे स्वास्थ्य की सबसे महत्वपूर्ण गारंटी है। हमारे शरीर को सेहतमंद बनाए रखने में खानपान का रोल सबसे अहम होता है लेकिन लोगों की खानपान की बदलती आदतों और जरूरतों को देखते हुए अब बहुत सारी चीजों को बनाने और उगाने का तरीका भी बदल चुका है, जिनमें अब तरह-तरह के रसायन भी मिलाए जा रहे हैं। ऐसे में विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस मनाने का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को पौष्टिक और संतुलित भोजन प्रदान करना है, साथ ही खानपान से होने वाले खतरों को रोकना, मिलावटी चीजों का पता लगाना और इनके बारे में लोगों को जागरूक कर उन्हें सेहत के प्रति जागरूक बनाना है। असुरक्षित खाद्य पदार्थ विभिन्न बीमारियों का कारण बनते हैं और अन्य खराब स्वास्थ्य स्थितियों में योगदान करते हैं, जिसमें बिगड़ा हुआ विकास, सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी, संक्रामक अथवा गैर-संक्रामक रोग और मानसिक बीमारियां शामिल हैं।

वैसे खाद्य जनित खतरे रासायनिक अथवा भौतिक प्रकृति के हो सकते हैं और प्रायः साधारण आंखों से दिखाई नहीं देते। दरअसल हमारे भोजन को उगाने, संसाधित करने, संग्रहीत करने, वितरित करने और तैयार करने के लिए कई लोग मिलकर काम करते हैं और इस प्रक्रिया में कई ऐसे चरण होते हैं, जहां हमारा भोजन असुरक्षित हो सकता है। विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस की शुरूआत का उद्देश्य यही रहा कि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारा भोजन खाने के लिए सुरक्षित है। इसीलिए जब खेत में भोजन उगाया जाता है, तब से लेकर जब तक यह हमारी थाली तक पहुंचता है, हमें पूरी तरह सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि दूषित भोजन के सेवन से खाद्य जनित बीमारियां होने की संभावना बहुत बढ़ जाती हैं लेकिन चूंकि भोजन को हम तक पहुंचाने में कई लोग शामिल होते हैं, इसलिए इसे सुरक्षित रखना हमेशा इतना आसान नहीं होता। इसीलिए डब्ल्यूएचओ, एफएओ और खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) जैसे संगठन हमारे भोजन को सुरक्षित रखने के लिए कुछ नियम बनाते हैं। बहरहाल, विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस न केवल अच्छे और स्वच्छ भोजन की आदतों की वकालत करता है बल्कि उपभोक्ताओं को खाद्य सुरक्षा के बारे में शिक्षित करने और उन्हें खाद्य जनित बीमारियों को रोकने के लिए सावधानी बरतने के लिए प्रोत्साहित करने का भी अवसर प्रदान करता है। यह दिवस हमें भोजन को हम तक पहुंचाने में इस्तेमाल किए जाने वाले सुरक्षा उपायों पर अतिरिक्त ध्यान देने के लिए प्रेरित करता है, जिसका अर्थ है सभी के लिए बेहतर और स्वस्थ भोजन। दुनियाभर में जितने ज्यादा से ज्यादा लोग खाद्य सुरक्षा के बारे में जागरूक होंगे, तभी हम अपने भोजन को सुरक्षित रखने के लिए बेहतर कदम उठा सकेंगे और खराब खाने से पनपने वाले खतरे को पहचान और समझ सकेंगे।

मुद्दा

विपिन तिवारी

लेखक पत्रकार हैं।

रुतबे से टूटता सामाजिक तानाबाना

कटनी, मध्य प्रदेश का एक छोटा-सा शहर, इन दिनों एक ऐसी घटना की वजह से चर्चा में है, जो न केवल व्यक्तिगत रिश्तों की नाजुकता को उजागर करती है, बल्कि समाज में बढ़ते रुतबे और अहंकार के दुष्परिणामों को भी सामने लाती है। यह कहानी है तत्कालीन सीएसपी ख्याति मिश्रा और उनके तहसीलदार पति शैलेंद्र शर्मा के बीच चल रहे वैवाहिक विवाद की, जो अब न केवल उनके निजी जीवन तक सीमित है, बल्कि सामाजिक ताने-बाने को भी प्रभावित कर रहा है।

विवाद की शुरुआत

यह मामला पहली बार तब सुर्खियों में आया जब करीब आठ महीने पहले शैलेंद्र शर्मा ने मध्य प्रदेश के डीजीपी को एक पत्र लिखकर शिकायत की थी। पत्र में उन्होंने आरोप लगाया कि कटनी के तत्कालीन एसपी अभिजीत रंजन उनके परिवार को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। इस पत्र ने न केवल पुलिस महकमे में हलचल मचाई, बल्कि ख्याति मिश्रा और उनके पति के बीच गहरे मतभेदों को भी उजागर किया। यह घटना जहां एक ओर वैवाहिक रिश्तों में विश्वास की कमी को दर्शाती है, वहीं दूसरी ओर यह भी सवाल उठाती है कि क्या सत्ता और रुतबा रिश्तों पर भारी पड़ रहा है?

रात के अंधेरे में एक पिता की आंखों में आंसू

खबरों के अनुसार, ख्याति मिश्रा ने अपने सीएसपी आवास में अपने पिता और परिजनों के खिलाफ पुलिस को बुलाकर कथित तौर पर उनकी पिटाई करवाई। ख्याति मिश्रा एक सामान्य परिवार से ताल्लुक रखती हैं। उनके पिता एक शिक्षक हैं, जिन्होंने अपनी बेटी को शिक्षा और संस्कारों के बल पर इस मुकाम तक पहुंचाया। लेकिन आज वही पिता अपनी बेटी के व्यवहार से आहत और लाचार हैं। रात के अंधेरे में एक पिता की आंखों में आंसू और बेबसी साफ नजर आती है। उनके लिए इससे बड़ी शर्मिंदगी और क्या हो सकती है, जब उनकी अपनी औलाद उनके सम्मान को ठेस पहुंचाए?

रिश्तों का टूटना और सामाजिक प्रभाव

यह घटना केवल एक परिवार की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक ताने-बाने के टूटने का प्रतीक है, जहां रिश्तों की नींव विश्वास, सम्मान और प्रेम पर टिकी होती है। ख्याति मिश्रा और उनके पति के बीच का विवाद, और अब उनके पिता के साथ हुआ यह कृत्य, यह दर्शाता है कि सत्ता, रुतबा और व्यक्तिगत अहंकार किस तरह रिश्तों को तार-तार कर सकते हैं। ससुराल और मायके, दोनों ही पक्ष इस घटना से आहत हैं। एक पिता की इच्छा है कि उसका परिवार टूटने से बचे, लेकिन रुतबे की यह जंग उनके सपनों को चकनाचूर कर रही है।

समाज के सामने सवाल

यह घटना समाज के सामने कई गंभीर सवाल खड़े करती है। क्या सत्ता और पद का दुरुपयोग अब रिश्तों को भी निगल रहा है? क्या हमारी सामाजिक संरचना इतनी कमजोर हो चुकी है कि एक बेटी अपने पिता के खिलाफ, या एक पति अपनी पत्नी के खिलाफ इस तरह खड़ा हो सकता है? यह केवल ख्याति मिश्रा की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस बदलते सामाजिक परिदृश्य की तस्वीर है, जहां रिश्तों की गरिमा को सत्ता और अहंकार के नीचे कुचला जा रहा है।

टंकी के वाल्व नियंत्रण में बड़ी लापरवाही उजागर, नपा ने तीन कर्मचारियों को दिए नोटिस

बैतूल। शंकर वार्ड में काली चट्टान की टंकी के वाल्व नियंत्रण के कार्य में गंभीर लापरवाही होने के कारण कई दिनों से नगर पालिका की टंकियां पूरी नहीं भरा पा रही थी। इस भारी चूक के बाद तीन कर्मचारियों को नगर पालिका सीएमओ ने नोटिस जारी कर 24 घंटे में लिखित स्पष्टीकरण मांगा है। स्पष्टीकरण न देने पर तीनों कर्मचारियों पर एक तफरा कार्रवाई की जा सकती है। दरअसल शंकर वार्ड में काली चट्टान की टंकी को भरने के लिए वाल्व नियंत्रण के साथ अधीनस्थ क्षेत्रों में पेयजल उपलब्ध नहीं हो पा रहा था। वार्ड वासियों की शिकायत के बाद जब नपा के अधिकारी मौके पर पहुंचे, तो पाया गया कि काली चट्टान स्थित टंकी में वाल्व नियंत्रण के कार्य में गंभीर लापरवाही बरती जा रही थी। यहीं पर बडी चूक उजागर हुई कि मुख्य पाइप लाइन से फिल्टर प्लांट से सबसे पहले काली चट्टान की टंकी भरने के बाद शेष वार्डों में स्थित 9 टंकियां सप्लाई होती है। इसके नियंत्रण के कार्य में गंभीर चूक की वजह से ही न सिर्फ काली चट्टान क्षेत्र बल्कि अन्य वार्डों में भी पानी की सप्लाई प्रभावित हुई है। इसके बाद सीएमओ सतीश मटसेनिया ने वाल्वमेन छोटू पवार और लक्ष्मीनारायण मायवाड़ को नोटिस जारी करते हुए लिखित में स्पष्टीकरण मांगा है। नोटिस में उल्लेख किया गया है कि वाल्वमेन की लापरवाही के कारण पूरे शहर में पेयजल आपूर्ति प्रभावित हुई है। तीनों वाल्वमेन को 24 घंटे में स्पष्टीकरण न मिलने पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी गई है।

समाजसेवी दीपाली डागा ने किया सार्वजनिक नल कनेक्शन का लोकार्पण

बैतूल। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रागेश्वर शिव मंदिर प्रांगण ग्रीन सिटी प्रागा होम्स कॉलोनी में विशेष आयोजन किया गया। इस मौके पर आचार्य श्री बालकृष्ण उद्यान के सामने और क्रांतिकारी भगत सिंह उद्यान के सामने शरद परिहार के जन्मदिन पर नारियल के पौधे का रोपण किया गया। पौधारोपण कार्यक्रम के बाद क्रांतिकारी भगत सिंह उद्यान और छत्रपति संभाजी महाराज उद्यान में सतपुड़ा वैली पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती दीपाली निलय डागा ने सार्वजनिक नल कनेक्शन का लोकार्पण किया। इस कार्यक्रम में नगर के गणमान्य नागरिकों ने सहभागिता की। आयोजन में प्रशांत राजपूत, राकेश गुप्ता, सुभाष पवार, संतोष तोमर, उदित तोमर, सावित्री विनोद परिहार, अजय मालवीय, दीपिका मालवीय, विनय शर्मा, अनुराग दुबे, सावित्री तोमर, नित्यानंद उपाध्याय, राम सोलंकी महोबे, श्रेया दुबे, विनोद परिहार, उदित तोमर, गुरुवक्ष पाटिल, पुष्पा पाटिल, संतोष तोमर, रमाशंकर अग्निहोत्री, दिनेश ढलते, घनश्याम घोडकी, विनोद अतुलकर, दुलारी शेषकर, श्रवण कुमार, रूपेश कुमार पाटिल, संतोष सोनारे और अरुण सोनी विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर संकल्प लिया कि वे पर्यावरण की रक्षा के लिए निरंतर कार्य करेंगे और पौधारोपण को अपनी दिनचर्या में शामिल करेंगे।

वेस्ट से बनाई डस्टबिन का उपयोग शुरू

बैतूल। यदि मन में कुछ कर गुजरने की तमन्ना हो तो फिर संसाधनों का अभाव आड़े नहीं आता है। जुनून के चलते व्यक्ति कबाड़ से भी जुगाड़ कर ऐसी उपयोगी सामग्री का निर्माण कर देता है जो कि बरबस ही चर्चा का विषय बन जाता है। ऐसी ही एक सामग्री वेस्ट से डस्टबिन नगर पालिका की नपा अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर एवं सीएमओ सतीष मटसेनिया के मार्गदर्शन में नपा की पहली महिला ब्रांड एम्बेसेडर श्रीमती नेहा गर्ग और उनकी टीम ने बनाई है जिसकी शहरवासियों द्वारा मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की जा रही हैं। वहीं इस डस्टबिन का उपयोग भी लोगों ने शुरू कर दिया है। डस्टबिन को नेहरू पार्क के पास लगाया गया है जो कि राहगीरों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। ब्रांड एम्बेसेडर श्रीमती नेहा गर्ग ने बताया कि इस डस्टबिन को बनाने के लिए लगभग 200 किलो सामग्री का उपयोग किया गया है जिनमें अधिकांश वस्तु कबाड़ की है। इनमें पुरानी प्लेटे, टूटे हुए तसले, चप्पलें, जाली, टूटे खिलौने, डब्बे, ढक्कन सहित प्लाई लगाई गई है। इन्हीं सब सामग्री को एकत्र कर श्रीमती नेहा गर्ग और उनकी टीम में शामिल श्रेणिक जैन, उमा सोनी एवं कंचन यादव ने मिलकर डस्टबिन का निर्माण किया है जो कि शानदार दिखाई दे रही है।

पर्यावरण दिवस पर ओम आयुर्वेदिक कॉलेज ने रोपे 100 औषधीय पौधे

बैतूल। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर द्रव्यगुण विभाग, ओम आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज, भारत-भारती, जामठी द्वारा पौधारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु जनजागरूकता रैली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कॉलेज परिसर में कुल 100 महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक पौधों को लगाया गया। साथ ही 25 औषधीय पौधों को पास के कढाई क्षेत्र के नागरिकों में वितरित किया गया और उन्हें औषधीय पौधों के उपयोग एवं महत्व की जानकारी दी गई। संस्था अध्यक्ष सोनू पाल तथा कॉलेज प्राचार्य डॉ. विरेन्द्र शाह के मार्गदर्शन में पर्यावरण संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने कॉलेज द्वारा रैली निकाली गई, जिसमें प्लास्टिक हटाओ, जीवन बचाओ का नारा दिया गया। इस रैली के माध्यम से कॉलेज परिसर और आसपास के क्षेत्रों में प्लास्टिक मुक्त वातावरण के लिए प्रेरित किया गया।झ कार्यक्रम का समापन विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक जिंगरवार एवं डॉ. संदीप पाल द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ किया गया। इस आयोजन में बीएएमएस द्वितीय वर्ष के छात्र-छात्राओं सहित कॉलेज के सभी शिक्षकगण व कर्मचारी वर्ग सक्रिय रूप से शामिल रहे। इसके अतिरिक्त, 6 जून को पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में बी.ए.एम.एस. द्वितीय वर्ष की कक्षा में एक पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने पर्यावरण बचाओ, हरियाली बढ़ाओ जैसे विषयों पर सुंदर एवं प्रेरणादायक पोस्टर प्रस्तुत किए।

शहर से प्रतिदिन निकलने वाले कचरे का वैज्ञानिक पद्धति से होगा निष्पादन

ट्रेंचिंग ग्राउंड पर करोड़ों की लागत से बनेगा एमआरएफ सेंटर

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर के 33 वार्डो से करीब 35 टन कचरा प्रतिदिन निकलता है और यह कचरा गौठाना स्थित ट्रेंचिंग ग्राउंड पहुंचता है। जिससे ट्रेचिंग ग्राउंड में कचरे का ढेर लगता जा रहा है, लेकिन अब नगरपालिका द्वारा ट्रेंचिंग ग्राउंड में स्थाई तौर पर एमआरएफ सेंटर (मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी केंद्र) बनाए जाने की तैयारी की जा रही है और इसके लिए टेंडर भी निकाले जा रहें हैं। एमआरएफ सेंटर में प्रतिदिन आने वाले कचरे का वैज्ञानिक पद्धति से निष्पादन की प्रक्रिया की जाएगी। नगरपालिका बैतूल के सीएमओ सतीश मटसेनिया ने बताया कि ट्रेंचिंग ग्राउंड में एमआरएफ सेंटर बनाए जाने के लिए जो पहला टेंडर निकाला गया है उसकी लागत 1 करोड़ 76 लाख है। जिसमें ट्रेंचिंग ग्राउंड में कचरे के निष्पादन के लिए मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी केंद्र बनाया जाएगा। वहीं दूसरा टेंडर लगभग 3 करोड़ की लागत का मशीनों के लिए होगा। जहां प्रोसेसिंग प्लांट के जरिए कचरे का वैज्ञानिक पद्धति से निष्पादन होगा। यानि सूखे और गीले कचरे को अलग-अलग श्रेणियों में बांटकर उपयोगी और गैर उपयोगी सामानों को अलग-अलग किया जाएगा और अलग-अलग मशीनों से यह काम होगा। एमआरएफ सेंटर के संचालन के लिए नई एजेंसी तय की जाएगी। जिसके लिए अलग से टेंडर प्रक्रिया भी होगी।

गौठाना ट्रेंचिंग ग्राउंड में कर रहे कचरा डंप

ट्रेचिंग ग्राउंड में मौजूद डेढ़ लाख टन पुराना कचरा पहले से पड़ा हुआ है। इस कचरे का वैज्ञानिक पद्धति से निष्पादन के लिए वर्तमान में लेगेसी वेस्ट प्लांट का संचालन किया जा रहा हैं। लेकिन शहर से जो प्रतिदिन 35 टन कचरा निकल रहा है उसके निष्पादन के लिए कोई इंतजाम नहीं किए गए है। गौरतलब है कि बैतूल शहर के 33 वार्डों से प्रतिदिन नगरपालिका द्वारा डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण का काम किया जाता है। इसके अलावा बाजार क्षेत्रों से भी कचरा संग्रहण होता है। नपा के मुताबिक शहर से प्रतिदिन 35 टन कचरा एकत्रित किया जाता है। यह कचरा गौठाना स्थित ट्रेंचिंग ग्राउंड में डंप किया जा रहा है। इस वजह से ट्रेंचिंग ग्राउंड में लेगेसी वेस्ट प्लांट लगे होने के बावजूद कचरे का ढेर कम नहीं हो रहा है।

रोजाना निकलने वाले कचरे का लग रहा ढेर

ट्रेचिंग ग्राउंड में, जो प्लांट वर्तमान में संचालित हो रहा है उसके टेंडर केवल 1.35 लाख टन पुराने कचरे के निष्पादन के लिए किए गए हैं। ट्रेंचिंग ग्राउंड में पुराने कचरे के निष्पादन के लिए इकोस्टोन इंफ्रा कंपनी को टेंडर दिया गया था। छह महीने में कंपनी को पूरे कचरे का निष्पादन किया जाना था, लेकिन समय सीमा में काम पूरा नहीं हो सका है। जिसके कारण नगरपालिका ने अतिरिक्त तीन माह के लिए सेवाएं बढ़ा दी है। बताया गया कि लेगेसी वेस्ट का जो प्लांट लगाया गया है, वह पुराना है इसलिए उसकी क्षमता कम है। इस वजह से समय-सीमा में कचरे का निष्पादन नहीं हो सका है। वर्तमान में ट्रेंचिंग ग्राउंड में अभी भी पुराने कचरे का ढेर लगा हुआ है, जबकि जो नया कचरा प्रतिदिन शहर से निकल रहा है वह वैसे ही पड़ा हुआ है।

ऐसे काम करता है एमआरएफ सेंटर

एमआरएफ सेंटर में सबसे पहले घर से, दुकानों से, और अन्य व्यावसायिक स्थानों से अलग-अलग कचरा इकट्ठा किया जायेगा और रीसाइकिल योग्य कचरा जैसे प्लास्टिक, कागज, धातु, कांच और गैर-रीसाइकिल योग्य सामग्री (जैसे सामान्य कचरा) को अलग-अलग किया जायेगा। रीसाइकिल योग्य सामग्री को अलग करके उसे रीसाइकिल प्रक्रिया के लिए तैयार किया जाता है। इसमें कचरे को साफ करना, चूर्णित करना, और अन्य प्रक्रियाएं शामिल हो सकती हैं। रीसाइकिल योग्य सामग्री को रीसाइकिल करने के लिए कारखानों या अन्य प्रसंस्करण सुविधाओं में भेजा जाता है, वहीं गैर-रीसाइकिल योग्य सामग्री को लैंडफिल या अन्य कचरा प्रबंधन सुविधाओं में भेजा जायेगा।

इनका कहना -

ट्रेचिंग ग्राउंड में एमआरएफ सेंटर की स्थापना के लिए हमारे द्वारा दो टेंडर लगाने की तैयारी है, जिसमें पहले टेंडर की लागत 1 करोड़ 76 लाख एवं दूसरा टेंडर लगभग 3 करोड़ की लागत का होगा। एमआरएफ सेंटर में प्रतिदिन शहर से निकलने वाले कचरे का वैज्ञानिक पद्धति से निष्पादन करके सुखे और गीले कचरे का अलग-अलग प्रसंस्करण किया जाएगा।

-**सतीश मटसेनिया,** सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

लोगों की जिंदगी से खेल रहे हैं झोलाछाप डॉक्टर

फर्जी डिग्रियों के आधार पर कर रहे हैं एलोपैथी इलाज, कोई बन बैठा है दांतों का डॉक्टर

बैतूल/मुलताई। मुलताई क्षेत्र में अलग-अलग पैथोलॉजी की फर्जी डिग्री के आधार पर एलोपैथिक इलाज कर रहे झोलाछाप डॉक्टरों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है और इसके साथ ही गलत इलाज के कारण होने वाली घटनाएं भी बढ़ रही है। इसके बावजूद भी प्रशासन झोलाछाप डॉक्टर और इनकी डिग्री को लेकर गंभीर नहीं है। हाल ही में एक नाबालिक लडक़ी की मौत के मामले में एक झोलाछाप डॉक्टर पर गलत इलाज के गंभीर आरोप लगे, किंतु न, तो उक्त डॉक्टर के खिलाफ अब तक कोई कार्रवाई हो सकी है और न हीं नगर के हर चौक चौराहे पर खुले झोलाछाप डॉक्टरों की दुकानों पर कोई असर दिखाई दे रहा है। कुछ वर्षों पूर्व निकटतम ग्राम चिखलीकला के एक झोलाछाप डॉक्टर ने हिवरा निवासी नाबालिक छात्रा को गलत इंजेक्शन लगा दिया था। इसके बाद नाबालिक प्रज्ञा पवार को अपना पैर गवाना पड़ा। मदद के लिए हाथ उठे और तत्कालीन मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ संवेदनशील ब्लॉक स्वास्थ्य अधिकारी रजनीश शर्मा के प्रयासों से गरीब परिवार की लडक़ी की जान तो बच गई, किंतु आज उसे अपाहिज की जिंदगी गुजारना पड़ रहा है।

मुलताई नगर में बढ़ रही है नीम-हकीमों की संख्या .....मुलताई नगर में पिछले कुछ वर्षों से नीम हकीम डॉक्टरों की बाढ़ आ गई है। यह फर्जी डिग्री एलोपैथिक की कोई भी डिग्री न होने के बावजूद एलोपैथिक इलाज करते हैं। इंजेक्शन लगाते हैं। बाटल लगाते हैं, यहां तक कि ऑपरेशन तक कर देते हैं। इन्होंने अपने क्लीनिक में लेबोरेटरी तक संचालित कर रखी है।

फरार अफीम तस्कर गोपाल बंजारा मंदसौर से गिरफ्तार

बैतूल और चित्तौड़गढ़ की पुलिस की संयुक्त टीम ने दबोचा

बैतूल। जिला अस्पताल बैतूल से फरार हुए अफीम तस्कर और शातिर बदमाश को बैतूल और राजस्थान की चित्तौड़गढ़ पुलिस ने मंदसौर जिले से पुन: गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी गोपाल उर्फ कालू पिता मांगीलाल बंजारा निवासी ग्राम आमलीचक, थाना जावद, जिला नीमच, (हाल निवासी ग्राम बटकीडोह, थाना चोपना) जिला अस्पताल बैतूल से राजस्थान पुलिस की गिरफ्त से फरार हो गया था। बैतूल और राजस्थान की पुलिस आरोपी की तलाश में जुटी हुई थी। इसकी गिरफ्तारी के लिए बैतूल एसपी निश्चल एन झारिया ने टीम गठित की थी। पुलिस टीम को अंतत: पुलिस को सफलता मिल ही गई। कोतवाली टीआई रविकांत डहेरिया ने बताया कि बैतूल जिले में दर्ज हुए अफीम के मामले में गोपाल बंजारा को गिरफ्तार किया गया था। चूंकि राजस्थान की चित्तौड़गढ़ जेल में बंद था और पैरोल के दौरान फरार हो गया था।

वह लंबे समय से फरार चल रहा था। फरारी के दौरान अफीम तस्करी के मामलों से जुड़ा रहा, जिसे बैतूल पुलिस ने गिरफ्तार किया था और उसे जेल भेज दिया गया था। आरोपी को पुराने मामलों में पूछताछ के लिए राजस्थान पुलिस ले गई थी। पूछताछ के बाद गोपाल को जिला जेल बैतूल लाया गया था। जेल में भेजने के पहले उसका मेडिकल कराने के लिए बैतूल जिला अस्पताल लाया गया था। इसी दौरान वह पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया था। उसकी फरारी के बाद से ही राजस्थान की चित्तौड़गढ़ और मध्यप्रदेश की बैतूल पुलिस की टीमें लगातार उसकी तलाश में जुटी थीं।

मंदसौर के भानुपरा से दबोचा

कोतवाली थाना प्रभारी रविकांत डेहरिया ने बताया कि गोपाल बंजारा की लोकेशन ट्रेस करने के बाद दोनों राज्यों की पुलिस ने मिलकर जाल बिछाया और उसे मंदसौर जिले के भानपुरा से दबोच लिया। इस कार्रवाई में स्थानीय खुफिया तंत्र और तकनीकी निगरानी का भी सहारा लिया गया। गोपाल बंजारा के खिलाफ अफीम तस्करी सहित कई गंभीर धाराओं में मामले दर्ज हैं। गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने अफीम तस्कर गोपाल बंजारा का मेडिकल कराकर उसे न्यायालय में पेश किया है। इस दौरान पुलिस ने सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए थे।

बैतूल अभिभाषक संघ चुनाव: अध्यक्ष पद के लिए अशोक वर्मा और अजय सिंह चौहान में होगी सीधी टक्कर

बैतूल। जिला अधिवक्ता संघ बैतूल के निर्वाचन कार्यक्रम के तहत नामांकन प्रक्रिया संपन्न हुई। मुख्य निर्वाचन अधिकारी नितिन मिश्रा एवं सहायक निर्वाचन अधिकारी महेश कुमार रावत, अरविन्द देशपांडे एवं राकेश पटेल द्वारा जानकारी दी गई कि नामांकन फार्म जमा करने की अंतिम समय सीमा 6 जून को ।सायं 4 बजे तक रखी गई थी। निर्धारित समय सीमा के भीतर कुल 26 अधिवक्ता प्रत्याशियों ने विभिन्न पदों के लिए नामांकन दाखिल किए।जिला अधिवक्ता संघ बैतूल का यह चुनाव आगामी 27 जून को संपन्न होगा, जिसमें अधिवक्ता अपने प्रतिनिधियों का चयन करेंगे। प्राप्त जानकारी अनुसार, अध्यक्ष पद के लिए दो वरिष्ठ अधिवक्ताओं अशोक कुमार वर्मा एवं अजय सिंह चौहान के बीच सीधा मुकाबला रहेगा। उपाध्यक्ष पद के लिए अलका गहीर, सुनील कुमार बासल और राजेन्द्र कुमार बघेल ने नामांकन दाखिल किया है। सचिव पद के लिए तीन उम्मीदवार राजेश मन्दरे, बलदेव कुमार महाजन एवं अजय सोनी मैदान में हैं। सहसचिव पद हेतु दीपक कुमार आसरेकर, बंटी कारोसिया और गौरव मगरदे के बीच मुकाबला होगा।

विश्व पर्यावरण दिवस पर भेंट किए पौधे

बैतूल। विश्व पर्यावरण दिवस पर साईं आरोग्यम फिजियोथेरेपी सेंटर बैतूल में मरीजों एवं परिजनों को पौधे भेंट किया। कार्यक्रम में साईं आरोग्य फिजियोथैरेपी सेंटर के डायरेक्टर एवं यूनाइटेड हेल्थ वर्कर वेलफेयर एसोसिएशन जिलाध्यक्ष डॉ. संदीप परिहार, यूनाइटेड हेल्थ वर्कर वेलफेयर एसोसिएशन के नर्मदापुरम संभाग अध्यक्ष डॉ. योगेश पवार एवं साई आरोग्य फिजियोथेरेपी सेंटर का पूरा स्टाफ मौजूद रहा। जहां मरीजों एवं उनके परिजनों को पौधे भेंट किया एवं मरीजों एवं उनके परिजनों को यह शपथ भी दिलाई कि हमें पर्यावरण के प्रति सहज रहना होगा। परिवार का हर एक नागरिक एक पौधा लगाकर इस पर्यावरण को बचाने में सहयोग प्रदान करेगा। बीते दिनों कोरोना काल में हमने यह जाना था कि पर्यावरण का शुद्ध होना कितना आवश्यक है। आज वृक्षों की कमी के कारण पर्यावरण प्रदूषण एवं बारिश की कमी देखी जा रही है। ऐसा ही हाल रहा तो कुछ वर्षों में हमें ऑक्सीजन भी खरीद कर लेनी पड़ेगी। डॉ. संदीप परिहार ने बताया कि हमारे द्वारा एक वृक्ष लगाकर हम संकल्प ले कि जब तक वह पौधा वृक्ष न बन जाए, तब तक हम उनकी देखभाल करेंगे और पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाएंगे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर बैतूल में हुआ वृहद वृक्षारोपण

बैतूल। विश्व पर्यावरण दिवस के शुभ अवसर पर बैतूल जेएच कॉलेज के सामने वृहद वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमे एक सौ एक आम और अन्य प्रजाति के पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री खंडेलवाल ने कहा कि हमारे पूर्वजों ने हमारे लिए विरासत छोड़ी है, उन्होंने वृक्ष लगाए थे। जिनका फल वर्तमान पीढ़ी चख रही है। हमारा भी दायित्व है कि हम बहुत से पौधे लगाएं, जिसका लाभ हमारे साथ आने वाली पीढ़ी को मिले। कार्यक्रम में सामाजिक संगठन, भाजपा पदाधिकारी-कार्यकर्ता, खेल संगठन, छात्र-छात्राएं, व्यापारी कॉलेज स्टाफ, पर्यावरण समिति के सदस्य गण उपस्थित रहे। विश्व पर्यावरण दिवस से प्रारंभ पौधारोपण आगामी दो माह तक चलने वाले कार्यक्रम के संयोजक आनंद प्रजापति, सहसंयोजक संजू सोलंकी, जिला भाजपा किसान मोर्चा अध्यक्ष

महेश्वर सिंह गब्बर चंदेल, श्रीमती सुषमा जगताप के साथ ही महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष ममता बबलू मालवीय, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रश्मि साहू, जिला भाजपा ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष राजा साहू, डॉ जयसिंगपुरे, संदीप यादव, बलराम जसुजा, नागरिक बैंक अध्यक्ष अतीत पवार, इंद्रपाल पुंडे आदि शामिल रहे।

सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना

क्रांतिदीप अलूने

लेखक मध्यप्रदेश जनसंपर्क विभाग के अधिकारी हैं।

समिट में मिलेंगे निवेश के व्यापक अवसर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सौर ऊर्जीकरण अंतर्गत वर्ष 2030 तक 500 गीगावॉट के लक्ष्य को हासिल करने संबंधी स्वप्न को साकार करने में अपना योगदान देने के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में राज्य सरकार निरंतर कार्य कर रही है। प्रदेश में निरंतर सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिये एक के बाद एक संयंत्र लगाये जा रहे हैं। इनसे प्रदेश की ऊर्जा उत्पादन क्षमता में सौर ऊर्जा की भागीदारी निरंतर बढ़ती जा रही है।

कृषकों की ऊर्जा आवश्यकताओं, मुख्य रूप से सिंचाई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, उनके करीब सौर ऊर्जा का उत्पादन कर, आय के अवसर उपलब्ध करवाते हुए, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (पीएम-कुसुम) योजना लागू की गयी है। पीएम-कुसुम योजना के घटक कुसुम-सी में ग्रिड संबंद्ध सिंचाई पम्पस् को ऊर्जीकृत करने के लिये कृषि फ़ीडर का सोलराइजेशन किया जाना है। योजना में सोलर संयंत्र स्थापना के लिये रु. 1.05 करोड़ प्रति मेगावाट केन्द्रीय सहायता राशि का प्रावधान है। परियोजना के विकासकों एवं अन्य स्टेक होल्डर्स को निगम द्वारा इस निविदा, वित्तीय प्रबंधन, तकनीकी जानकारी देने के लिये 'सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना समिट' 10 जून को कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेन्टर में आयोजित होगी।

सौर ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण पक्ष उपयोग करने के स्थान (बिंदु) पर इसके उत्पादन के साथ उपयोग करना भी है। सौर ऊर्जा के व्यापक उपयोग के लिये इन परियोजनाओं को विकेंद्रीकृत रूप से स्थापित किया जा सकता है। सरकार कृषि को लाभ का धंधा बनाने के लिए किसानों के हित में सिंचाई के लिये ऊर्जा की 10 घंटे आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लगभग 8000 समर्पित कृषि फीडर स्थापित किए गए हैं। इनका निरंतर विस्तार प्रक्रियाधीन है।

प्रदेश में 33/11 किलो वोल्ट विद्युत उप केन्द्रों पर सौर ऊर्जा परियोजना की स्थापना के समग्र लाभ को दृष्टिगत रखते हुए कार्य किया जा रहा है। प्रदेश में पीएम-कुसुम योजना के घटक कुसुम-सी में प्रदत्त लक्ष्य तक सीमित न रखते हुए और योजना को तकनीकी रूप से अधिक उपयोगी बनाते हुए कृषि फ़ीडर सोलराइजेशन को विस्तार दिया जा रहा है। इसके विस्तारीकरण के लिये ही 'सूर्य-मित्र कृषि फीडर' योजना क्रियान्वित की जा रही है।

''सूर्य-मित्र कृषि फीडर' योजना के प्रमुख उद्देश्य म.प्र. पॉवर मैनेज़मेंट कंपनी लिमिटेड को कम दर पर विद्युत उपलब्ध कराना है। सीधे विद्युत खपत स्थल पर ऊर्जा प्रदाय कर पारेषण हानि को कम करना, कृषि लोड का दिन में प्रबंध करना, किसान को सिंचाई के लिये दिन में बिजली उपलब्ध कराना भी इसका उद्देश्य है ताकि कृषकों की जीवन शैली को बेहतर बनाया जा सके। इसका उद्देश्य 33/11 किलो वोल्ट विद्युत वितरण उप केन्द्रों पर स्थापित पॉवर ट्रांसफार्मर पर ओवर-लोडिंग के परिणाम स्वरूप लो-वोल्टेज एवं पॉवर कट की समस्या को कम करना भी है। इन परियोजनाओं की स्थापना से विद्युत उपकेन्द्रों के उन्नयन पर आने वाले वित्तीय भार से बचा जा सकेगा। साथ ही बिना किसी निवेश के ग्रिड स्टेबिलिटी प्रबंधन किया जा सकेगा।

'सूर्य-मित्र कृषि फीडर' योजना में 100 प्रतिशत क्षमता तक विद्युत् सब-स्टेशन की सौर परियोजनाओं की स्थापना की जा सकेगी। इन परियोजनाओं के विकासकों के चयन के लिये म.प्र. ऊर्जा विकास निगम द्वारा निविदा जारी की गयी है। इसमें शासन के साथ 25 वर्षों तक विद्युत क्रय अनुबंध किया जाएगा। निविदा में 1900 से अधिक सब-स्टेशन पर 14 हजार 500 मेगावाट क्षमता परियोजनाओं के चयन के लिये अवसर उपलब्ध हैं। परियोजनाओं की स्थापना में पीएम कुसुम योजनान्तर्गत अनुदान प्राप्त करने का विकल्प उपलब्ध होगा। परियोजनाओं को एग्रीकल्चर इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड से 7 वर्षों तक 3 प्रतिशत्त ब्याज में छूट का प्रावधान भी किया गया है। वोकल फॉर लोकल के अंतर्गत स्थानीय उद्यमियों के लिए निवेश एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपनों को मोदी सरकार साकार कर रही है : केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर

केंद्र की मोदी सरकार के 11 वर्ष पूर्ण होने पर जिले में अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे

धार। केंद्र की मोदी सरकार के 11 वर्ष पूर्ण होने पर भाजपा प्रदेश संगठन निर्देशानुसार संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम के तहत आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों को लेकर जिला स्तरीय कार्यशाला शुक्रवार को भाजपा जिला कार्यालय धार में आयोजित की गई जिसमें केंद्र सरकार में मंत्री एवं क्षेत्रीय लोकसभा सांसद सावित्री ठाकुर भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती विधायक नीना वर्मा पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव पूर्व जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी पूर्व विधायक वेलसिंह भुरिया ने कार्यशाला को संबोधित किया। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा जिला महामंत्री प्रकाश धाकड़ मंचासीन रहें। स्तरीय कार्यशाला में सर्व प्रथम भारतमाता पितृ पुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्रों पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वल्लित कर आरंभ किया गया।

भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने आगामी संगठनात्मक कार्यों की जानकारी देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की उपबल्धियों को सेवा, सुशासन, गरीब कल्याण के 11 साल के तहत जन-जन तक पहुंचाने का कार्य जिले के कार्यकर्ता करेंगे। 9 जून को डिजिटल प्रतियोगिता होगी। 11 जून को प्रोफेशनल मीट कार्यक्रम आयोजित होगा। 5 जून से पर्यावरण की दृष्टि से पौधारोपण कार्यक्रमों का आयोजन जिला और मंडल स्तर पर आयोजित कर अपने-अपने क्षेत्र को हरा-भरा करने का प्रयास करना होगा, ताकि हमारी

आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण मिल सके। 'एक पेड़ मां' के नाम के तहत पौधा रोपकर उसे सहजने का काम हम सभी को करना है। मंडल स्तर पर 'विकसित भारत संकल्प सभा' का आयोजन कर संकल्प लिया जाएगा। प्रत्येक विधानसभा में केंद्र प्रायोजित योजनाओं के पंजीकरण शिविर आयोजित किए जाएंगे, ताकि आयुष्मान योजना सहित अन्य योजनाओं का 100 प्रतिशत लाभ लोगों को मिल सके। 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस से पहले 15 से 20 जून तक मंडलों में योग प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाए। 23 जून डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस एवं 6 जुलाई को उनकी जयंती मनायी जाएगी। 25 जून को कांग्रेस द्वारा लगाए गए आपातकाल के काले अध्याय के 50 वर्ष होने पर सेमिनार और लोकतंत्र सेनानी के सम्मान कार्यक्रम आयोजित करना है । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम में धार जिला अव्वल आने पर भोपाल में जिला अध्यक्ष के नाते मुझे शुभकामनाएं देकर प्रोत्साहित किया इसका श्रेय आप सभी कार्यकर्ताओं को जाता है इस माह भी 'मन की बात' कार्यक्रम में धार जिला अव्वल रहें।

केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपनों को साकार मोदी सरकार कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की उपबल्धियों को सेवा, सुशासन, गरीब कल्याण के 11 साल के तहत जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कार्यकर्ता करें। भाजपा का प्रत्येक पदाधिकारी भाजपा सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थी से जुड़कर योजना का प्रचार प्रसार करें।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि जिला स्तरीय कार्यशाला में जिला पदाधिकारी मंडल अध्यक्ष मोर्चे और प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष इस अभियान जिला टोली संयोजक सह संयोजक सदस्य समेत वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहें। कार्यशाला का संचालन दीपक शर्मा व आभार व्यक्त कपिल निनामा ने किया।

चिनाब रेलवे ब्रिज और पुल का शुभारंभ देशवासियों के लिए गौरव का क्षण : सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दुनिया के सबसे ऊंचे चिनाब रेलवे ब्रिज और देश के पहले केबल-स्टेड रेलवे पुल का शुभारंभ देशवासियों के लिए गौरव का क्षण है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एक्स संदेश में कहा है कि जम्मू-कश्मीर में स्थापित चिनाब रेलवे अत्याधुनिक तकनीक, बेमिसाल इंजीनियरिंग और दृढ़ संकल्प को साकार करने का प्रतीक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चिनाब रेलवे ब्रिज और केबल-स्टेड रेलवे पुल 'अंजी ब्रिज' का शुभारंभ सभी भारतीयों के लिए महत्वपूर्ण सौगात है ।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने प्रदेशवासियों को ईद-उल-अज़हा की दी बधाई

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने प्रदेशवासियों को ईद-उल-अज़हा की शुभकामनाएँ दी हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा है कि पर्व को पारंपरिक रूप से आपसी सौहार्द्र, शांति और समरसता के साथ मनाएँ।

आपले वाचनालय द्वारा श्रीनिवास हवालदार का सम्मान

इंदौर। पूर्व कलेक्टर, चिंतक और मराठी के वरिष्ठ लेखक श्रीनिवास हवालदार का आपले वाचनालय राजेंद्रनगर,साहित्य ,

कला संस्कृति केंद्र के सचिव संदीप और श्रीति राशिनकर द्वारा सम्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि श्रीनिवास हवालदार द्वारा मराठी के महत्वपूर्ण कवि ग्रेस की कविताओं पर लिखी अभ्यासपूर्ण पुस्तक पर उन्हें मध्य प्रदेश शासन की मराठी साहित्य अकादमी का सर्वोच्च भा. रा. तांबे पुरस्कार मिल चुका है।हाल ही में महाराष्ट्र साहित्य सभा ने उन्हें तात्या साहेब सरवटे पुरस्कार से भी सम्मानित किया है। उम्र के नब्बे वर्ष में भी लेखन में सक्रिय श्रीनिवासजी को संस्था द्वारा शाल और स्मृतिचिन्ह से उनके घर जाकर सम्मानित करते हुए उन्हें उनके रचनात्मक दीर्घ आयुष्य की शुभकामनाएं प्रेषित की गई।

रेल सेवा पुरस्कार 2024, भोपाल मंडल के 37 रेलकर्मी सम्मानित

भोपाल (नप्र)। रेलवे में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों के सम्मान में भोपाल मंडल द्वारा आयोजित 'रेल सेवा पुरस्कार 2024' समारोह 6 जून को न्यू नर्मदा क्लब सभागार परिसर में गारिमामय माहौल में सम्पन्न हुआ। मंडल रेल प्रबंधक देवाशीष त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में विभिन्न विभागों के 37 रेलकर्मियों को उनके सराहनीय योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान 13 स्टेशनों एवं डिपो को 'श्रेष्ठ कार्य निष्पादन शील्ड' भी प्रदान की गई। आयोजन में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने भी समा बांध दिया।

हर विभाग की रही भागीदारी- वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने बताया कि यह सम्मान समारोह रेलवे कर्मचारियों की सेवा निष्ठा और कार्य गुणवत्ता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हर वर्ष आयोजित किया जाता है। इस बार इंजीनियरिंग, यांत्रिक, विद्युत, राजभाषा, परिचालन, चिकित्सा, संरक्षा, सिग्नल और दूरसंचार समेत 17 विभागों के कर्मचारियों को चयनित किया गया। समारोह में महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती गुंजन त्रिपाठी, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी विजय सिंह, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया, सभी शाखा अधिकारी, यूनियन पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में रेलवे कर्मचारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर की डॉक्टरों पर बड़ी कार्यवाही

कलेक्टर ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सरदारपुर की बीएमओ डॉ. मुझाल्दा को हटाया, 13 डॉक्टर्स एवं कर्मचारियों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी

धार। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा के निर्देशानुसार मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा अनुविभागीय अधिकारी राजस्व सरदारपुर की निरीक्षण प्रतिवेदन रिपोर्ट के आधार पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरदारपुर की मुख्य खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. शीला मुजाल्दा को हटाया गया।

अनुविभागीय अधिकारी राजस्व सरदारपुर द्वारा विगत गुरूवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरदारपुर का आकस्मिक निरीक्षण किया गया था जिसमें कई अनियमितता पाई गई। डॉ. शीला मुझाल्दा का अपने कर्तव्यों के प्रति लापरवाही होकर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर व्यवस्थाओं को लेकर कोई नियंत्रण ना होने व डॉक्टर्स, कर्मचारियों की अनुपस्थिति पायी गई। उक्त लापरवाही के चलते कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने निर्देशानुसार सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरदारपुर की मुख्य खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. शीला मुझाल्दा को हटाया जाकर डॉ. अरूण मोहरानी पीजीएम सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरदारपुर को अन्य आगामी आदेश तक खण्ड चिकित्सा अधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरदारपुर का प्रभार सौंपा गया है।

इसी के साथ ही सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरदारपुर के अन्य 13 डॉक्टर्स व कर्मचारियों जिनमें फिजियोथेरेपिल्ट नीलम पटेल, चिकित्सा अधिकारी डॉ. सचिन द्विवेदी, सर्जिकल विशेषज्ञ डॉ. नितीन जोशी, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिल पाटीदार, बंध पत्र चिकित्सा अधिकारी डॉ. श्रुति मकवाना, डॉ. अनुकृति दीक्षित, दंत चिकित्सा अधिकारी डॉ. सपना कुमारी, डॉ. शिवांगिनी जोशी, चिकित्सा अधिकारी डॉ. आयुषी मित्तल, संविदा चिकित्सा अधिकारी डॉ. दीपक सोलंकी, स्टोर कीपर राहुल भारती एवं फार्मासिस्ट शतार्ची अग्रवाल के अस्पताल में अनुपस्थित रहने व अनियमितताओं के चलते अनुशासनात्मक कार्यवाही के आदेश जारी करते हुए कारण बताओ सूचना पत्र जारी किए गए है।

चिकित्सा अधिकारी डॉ. सचिन द्विवेदी, सर्जिकल विशेषज्ञ डॉ. नितीन जोशी एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिल पाटीदार द्वारा शासन के निर्देशों की अवहेलना किए जाने पर 15 दिवस एवं अन्य का एक-एक दिवस का वेतन काटते हुए अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रस्तावित किए जाने हेतु कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया।

कमिश्नर ने किया भोपाल की तीन गोशाला का निरीक्षण

भोपाल। भोपाल कमिश्नर संजीव सिंह शुक्रवार को जिले की 3 गोशालाओं में पहुंचे। उन्होंने जैविक कचरे से बायो गैस बनाने के प्लांट को देखा। वहीं, पानी और बिजली की व्यवस्था करने को कहा। कमिश्नर सिंह ने बरखेड़ी अब्दुल्ला, बालमपुर और सूखी सेवनिया का निरीक्षण किया।

बरखेड़ी अब्दुल्ला में विकसित कृषि संकल्प अभियान अंतर्गत आयोजित वैज्ञानिक कृषक संवाद का निरीक्षण भी किया। संवाद में वैज्ञानिक एमपी सिंह, डॉ. फतेह सिंह, डॉ. सुबीर चक्रवर्ती ने किसानों को उन्नत तकनीक एवं उर्वरकों की जानकारी दी। वहीं, सभी को नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी, हैप्पी सीडर के उपयोग करने के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिए।

जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय परिसर में कराटे खिलाड़ियों ने दिया वृक्षों को न काटने का संदेश

सुबह सवेरे सोहागपुर

जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में तिनका सामाजिक संस्था कराटे के खिलाड़ियों ने एक नाट्य के माध्यम से पर्यावरण के महत्व पर आयोजन आयोजित किया गया। आयोजन जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय के सचिव हमीरसिंह चंदेल समाजसेवी विशाल गोलानी, ब्लाक भाजपा अध्यक्ष अश्विनी सरोज, चंदा मिश्रा,आशु राय के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर नाट्य के माध्यम से समझाया गया कि पौधे कितने प्रकार होते हैं। जिसमें कई पौधे औषधि वाले होते हैं । कई वृक्ष छायादार एवं फलदार भी होते हैं। कराटे खिलाड़ियों ने अमृता देवी विश्नोई की जीवन शैली को

प्रदर्शित किया गया। जिसमें राजा अभयसिंह के आदेश पर उनके नए महल के निर्माण हेतु खुलजडली गांव से लकड़ी काटने से लेकर अमृता देवी एवं बिश्नोई समाज के द्वारा पेड़ों एवं जंगलों को बचाने के प्रयास की सराहनीय नाटक को प्रदर्शित किया । इसमें अमृता देवी का प्रसिद्ध वाक्य 'सर सटे पर रुक रहे तो भी सस्तो जाण' जिसका मतलब यदि एक सिर काटने से राजा के मंत्री और सिपाही एक पेड़ काटने से रोक रहे हैं। तो यह सौदा भी सस्ता है। कार्यक्रम के अंत में पेड़ों से हमें ऑक्सीजन मिलती है। फल मिलते हैं ।औषधीय मिलती हैं। और मात्र एक वृक्षारोपण करके फोटो खिंचवाने से और वाकई एक वृक्ष लगाकर जीवन भर उसकी देखभाल करने का पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। इस अवसर पर अतिथियों ने बच्चों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। उल्लेखनीय है कि आयोजक कराटे क्लब की महक सराठे ने विगत दिनों नेपाल में कराटे में मैडल जीता था ।

एम्स भोपाल के डॉ. अभिनव सिंह ने बार्सिलोना (स्पेन) में अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया शोध

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में संस्थान न केवल उपचार के क्षेत्र में बल्कि अनुसंधान और शैक्षणिक उत्कृष्टता के क्षेत्र में भी निरंतर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है। इसी क्रम में, बर्न्स एवं प्लास्टिक सर्जरी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अभिनव सिंह ने स्पेन के बार्सिलोना में आयोजित 'वर्ल्ड सोसाइटी फॉर रिकंस्ट्रक्टिव माइक्रोसर्जरी (डब्ल्यूएसआरएम) कांग्रेस 2025' में एम्स भोपाल का प्रतिनिधित्व किया। इस प्रतिष्ठित वैश्विक मंच पर डॉ. अभिनव सिंह ने अपने शोध कार्य निचले अंग पुनर्निर्माण में एंटरोलैटरल थाई फ्लैप की उपयोगिता- 39 मामलों की एक पुनरावलोकनात्मक श्रृंखला पर मौखिक प्रस्तुति दी। यह

संपूर्ण अध्ययन एम्स भोपाल में ही संपन्न हुआ था, जिसमें जटिल निचले अंगों की शल्य चिकित्सा हेतु एलएलटी फ्लैप तकनीक का प्रभावी और सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया। गौरतलब है कि यह कांग्रेस माइक्रो सर्जरी के क्षेत्र में विश्व के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित मंचों में से एक है, जिसमें विश्व के विभिन्न देशों से आए 2500 से अधिक प्रमुख प्लास्टिक एवं पुनर्निर्माण सर्जनों ने सहभागिता की। इस सम्मेलन में शोध पत्रों के चयन हेतु अत्यंत कठोर प्रक्रिया अपनाई जाती है, इसके बावजूद डॉ. सिंह के शोध पत्र को मौखिक प्रस्तुति के लिए चयनित किया गया।

इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा,डॉ. अभिनव सिंह की यह उपलब्धि एम्स भोपाल के लिए अत्यंत गर्व का विषय है। विश्व मंच पर हमारे संस्थान का प्रतिनिधित्व यह प्रमाणित करता है कि एम्स भोपाल में किया जा रहा अनुसंधान और चिकित्सा कार्य वैश्विक मानकों के अनुरूप है। यह उपलब्धि न केवल हमारे चिकित्सकों के लिए प्रेरणास्रोत है, बल्कि आम नागरिकों के भीतर यह विश्वास भी सुदृढ़ करती है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की चिकित्सा सेवाएं अब भारत में, विशेषकर एम्स भोपाल में, उपलब्ध हैं।

उल्लेखनीय है कि डॉ. सिंह द्वारा प्रस्तुत एएलटी फ्लैप तकनीक उन रोगियों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रही है, जिन्हें सड़क दुर्घटनाओं, गंभीर संक्रमण या कैंसर के उपरांत निचले अंगों में गहन क्षति का सामना करना पड़ता है। इस तकनीक की मदद से न केवल अंगों को संरक्षित किया जा सकता है, बल्कि रोगी के जीवन की गुणवत्ता में भी उल्लेखनीय सुधार संभव है।

गुरू ही जीवन की दिशा तय करते हैं : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

लोकमान्य तिलक शिक्षण समिति के अभिनंदन समारोह में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव शुक्रवार को लोकमान्य तिलक शिक्षण समिति के अभिनंदन कार्यक्रम में शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लोकमान्य तिलक विद्यालय परिसर में भविष्य के विकास का संकल्प निर्मित हुआ है। ये परिसर राष्ट्रवादी विचारों का जीवंत केंद्र है। मुख्यमंत्री ने विश्वविद्यालयों में कुलपति के स्थान पर कुलगुरु संबोधित किए

जाने पर कहा कि गुरु शब्द अंधेरे से प्रकाश को जोड़ता है। माता-पिता के बाद गुरु ही जीवन की दिशा तय करते हैं। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में लोटी स्कूल से जुड़े अपने विद्यार्थी परिषद के समय के अनुभव भी साझा किए। विधायक श्री अनिल जैन कालुहेड़ा एवं अन्य गणमान्य नागरिक मौजूद थे। कार्यक्रम में स्वागत भाषण श्री किशोर खंडेलवाल ने दिया। मुख्यमंत्री ने मेधावी छात्रों को पुरस्कार प्रदान किये। श्री खंडेलवाल ने बताया कि यह कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष शिक्षकों के उन्नयन के लिए 3 दिवसीय अभ्यास वर्ग के चलते आयोजित किया जाता है। इसमें अलग-अलग विषय होते हैं। कार्यकम में विद्यालय का स्टाफ उपस्थित रहा। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कार्यक्रम में 10वीं में टॉपर 3 छात्र, छात्राओं एवं राष्ट्रीय प्रतियोगिता मल्लखम्भ खेल में मैडल हासिल करने वाले 4 खिलाड़ी छात्र, छात्राओं का सम्मान किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में समिति अध्यक्ष श्री किशोर खंडेलवाल, सचिव श्री विश्वनाथ सोमन और श्री गिरीश भालेराव ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री गिरीश भालेराव ने किया और आभार प्रदर्शन श्री विश्वनाथ सोमन ने किया।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने किया देव श्री फ़िल्म एंड टीवी इंस्टिट्यूट के कार्यालय का शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने देव श्री फ़िल्म एंड टीवी इंस्टिट्यूट के भोपाल कार्यालय का उद्घाटन किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने संस्थान की स्थापना को स्थानीय प्रतिभाओं के प्रोत्साहन और क्षेत्रीय संस्कृति के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल बताया। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश, विशेष रूप से भोपाल और उसके आस-पास के अंचल में कला, संगीत, अभिनय, निर्देशन और तकनीकी दक्षता से परिपूर्ण प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, आवश्यकता है तो उन्हें उचित मंच देने की। उन्होंने कहा कि देव श्री फ़िल्म एंड इंस्टिट्यूट इस दिशा में एक सशक्त भूमिका निभा सकता है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि आज का युग संचार, सिनेमा और डिजिटल मीडिया का है, जिसमें क्षेत्रीय भाषाएँ, लोक संस्कृति और पारंपरिक कलाएं भी वैश्विक मंच पर पहुँच रही हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह संस्थान मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक विविधता और पारंपरिक मूल्यों को फिल्म और मीडिया के माध्यम से उजागर करेगा, जिससे न केवल राज्य की पहचान मजबूत होगी, बल्कि स्थानीय युवाओं को रोजगार, प्रशिक्षण और पहचान के नए अवसर भी प्राप्त होंगे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने संस्थान के संस्थापक एवं संचालक श्री विनोद तिवारी को बधाई और शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर सांस्कृतिक, मीडिया और शैक्षणिक क्षेत्र से जुड़े प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

जल गंगा संवर्धन अभियान

मजबूती से आगे बढ़ती मध्यप्रदेश की जल संरक्षण यात्रा

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में जल संरक्षण की यात्रा दिन प्रति दिन मजबूती से आगे बढ़ रही है। जनभागीदारी से जल संरचनाओं के संरक्षण और सफाई के कार्य हाथ में लिये गये है। ऐतिहासिक, संस्कृतिक और धार्मिक महत्व वाले जल स्त्रोतों के सफाई के कार्य को प्राथमिकता दी जा रही है। नर्मदा पथ पर यात्रा के माध्यम से नदी किनारे ग्रामों में जल चौपाल कर ग्रामीणों को नदी के आसपास साफ सफाई के महत्व के बारे में जानकारी दी जा रही है।

जल है जीवन की धारा कल का यही सहारा

शहडोल जिले में स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से जल संवर्धन का कार्य लगातार किया जा रहा है। इसी के साथ जल है जीवन की धारा, कल का यही सहारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्पों को साकार करने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर 'जल गंगा सवंर्धन अभियान' 30 मार्च से 30 जून तक चलाया जा रहा है। यह अभियान जन-जन के जीवन से जुड़ा महत्वपूर्ण अभियान है। अभियान के अंतर्गत जहां एक ओर नये तालाब बनाये जा रहे, वहीं दूसरी ओर पुराने तालाबों, बावड़ियों और कुँओं का जीर्णाद्धार का कार्य भी किया जा रहा है।

नदियों को साफ-स्वच्छ एवं जल एकत्रित करने के लिए भी कार्य किए जा रहे हैं। इस अभियान के तहत ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व वाले तालाबों, जल स्त्रोतों तथा देवालयों में जल संरक्षण के कार्य भी किये जा रहे हैं। अभियान जन प्रतिनिधियों, स्थानीय समुदाय, जनभागीदारी, आमजन और सरकार के संयुक्त प्रयास से संचालित हो रहा है। अभियान में मशीन, सामग्री और श्रम का समुचित नियोजन किया जा रहा है। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत शहडोल जिले के जनपद पंचायत सोहागपुर के ग्राम पंचायत मैकी, ग्राम पंचायत दुलादर सहित अन्य ग्राम पंचायतों में नवीन खेत तालाब के कार्य किये गए है।

- **ग्राम समर्रा में नल कनेक्शनों में टोटियां लगायी गयी** - टीकमगढ़ कलेक्टर श्री विवेक श्रोत्रिय के निर्देशानुसार जिले में जलगंगा संवर्धन अभियान कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसी क्रम में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा जल जीवन मिशन के तहत ग्राम समर्रा में एकल जल प्रदाय योजना के अंतर्गत नल कनेक्शनों में टोंटियां लगायी गईं। ग्रामीणों को पानी के अनावश्यक बहने से राकेने की समझाइश दी गई। ग्राम समर्रा में करीब 20 घरों के नल कनेक्शनों में टोटियों को लगाया गया। यह पहल ग्रामीणों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के उद्देश से की गई है। ग्रामीणों को सलाह दी गई है कि पानी भरते ही नल की टोटी बंद कर देना चाहिए, जिससे जल को बर्बाद होने से रोका जा सके।
- **अभियान पर केन्द्रित प्रदर्शनी का सरपंचों ने किया अवलोकन**- राज्य सरकार के निर्देश पर 30 मार्च से प्रारंभ हुए प्रदेश स्तरीय जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जनसहभागिता से निरंतर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। आगामी 30 जून तक संचालित होने वाले इस महत्वाकांक्षी अभियान में प्राचीन जल स्त्रोतों एवं कुएं व बावड़ियों के जीर्णाद्धार कार्य सहित जल संरक्षण के लिए विभिन्न योजनाओं अंतर्गत खेत तालाब निर्माण इत्यादि का कार्य ग्रामवासियों के सहयोग से क्रियान्वित हो रहा है।
  अभियान में स्थानीय जनप्रतिनिधियों द्वारा भी उत्साहपूर्वक सहभागिता की जा रही है। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान में विभिन्न कार्यों को जनसहभागिता से बेहतर रूप में क्रियान्वित करने की कार्ययोजना बनाई गई है। जिले के सभी विकासखण्ड में अभियान के तहत पूर्ण हो चुके एवं प्रगतिरत कार्यों के बारे में जानकारी तथा तकनीकी पहलुओं से अवगत कराने के लिए जिला पंचायत परिसर में प्रदर्शनी लगाई गई।

केएफ रुस्तमजी पुरस्कार पाने वालों की सूची जारी

- **एएसपी सहाय, राजेश, इंस्पेक्टर चौगड़े को रिवाल्वर; निरीक्षक मनोज, एचसी सागर को मिलेगी गन**

भोपाल (नप्र)। पुलिस मुख्यालय ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक स्तर के दो अफसरों और एक कार्यवाहक निरीक्षक को रिवाल्वर देने का फैसला किया है। इन्हें परम विशिष्ट श्रेणी में यह पुरस्कार दिया गया है। इसके साथ ही अति विशिष्ट श्रेणी में एक इंस्पेक्टर और एक प्रधान आरक्षक को बारह बोर की गन और प्रमाण पत्र देने का फैसला किया गया है। इनके अलावा 45 पुलिस अफसरों और कर्मचारियों को 50 हजार रुपए की राशि और प्रमाण पत्र दिए जाएंगे। गृह विभाग ने यह पुरस्कार केएफ रुस्तमजी अवॉर्ड 2020 के अंतर्गत देने का निर्णय लिया है।

इन्हें मिली रिवाल्वर और 12 बोर गन

गृह विभाग द्वारा जिन अधिकारियों और कर्मचारियों को रिवाल्वर और 12 बोर गन देने का फैसला किया गया है। उसमें राजेश सहाय पुलिस अधीक्षक लोकायुक्त इंदौर, राजेश तिवारी पूर्व एडिशनल एसपी और ओमप्रकाश चौगड़े कार्यवाहक निरीक्षक सतना शामिल हैं। इन तीनों को परम विशिष्ट श्रेणी में रिवाल्वर और प्रमाण पत्र मिलेंगे। वहीं अति विशिष्ट श्रेणी में मनोज शर्मा निरीक्षक पीएचक्यू, ज्योति तिवारी कार्यवाहक प्रधान आरक्षक सागर को एक 12 बोर की गन और प्रमाण पत्र मिलेगा।

विशिष्ट श्रेणी में इनको पुरस्कार

पीएचक्यू द्वारा पुरस्कार पाने वालों की जो सूची जारी की गई है। उसमें विशिष्ट श्रेणी में शालिनी दीक्षित अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त जोन 3 नगरीय पुलिस भोपाल, संदेश कुमार जैन पुलिस अधीक्षक रेडियो भोपाल, विनय प्रकाश पॉल एआईजी पीएचक्यू भोपाल, विक्रम सिंह एएसपी मऊगंज, ममतेश कुमार माली एसपी पीटीएस एमटी भोपाल के नाम हैं। साथ ही निशा रेड्डी एएसपी आगरमालवा, अभय राम चौधरी रिटायर्ड डीएसपी, अवनीत शर्मा कार्यवाहक उप पुलिस अधीक्षक आजाक शिवपुरी, प्रभात शुक्ला कार्यवाहक डीएसपी आजाक कटनी, रविंद्र कुमार गौतम रिटायर्ड डीएसपी, सुनील यादव कार्यवाहक डीएसपी पीटीएस पचमढ़ी, राशिद अहमद इंस्पेक्टर साइबर सेल जोन इंदौर, नरेंद्र कुमार मिश्रा इंस्पेक्टर जबलपुर भी सम्मानित होंगे। इसी कैटेगरी में कौशलेंद्र कुमार रिटायर्ड निरीक्षक, वीरेंद्र सिंह धाकड़ कार्यवाहक निरीक्षक राजगढ़, सौरभ पांडेय कार्यवाहक निरीक्षक नर्मदापुरम, संतोष सिंह ठाकुर कार्यवाहक निरीक्षक रायसेन, रवि ठाकुर कार्यवाहक निरीक्षक एटीएस इंदौर, राजन अहिरवार कार्यवाहक निरीक्षक एटीएस मुख्यालय भोपाल, अखिलेश वर्मा कार्यवाहक निरीक्षक राजगढ़, विश्वनाथ शुक्ला सेवानिवृत्त निरीक्षक को 50 हजार रुपए और प्रमाण पत्र दिए जाने का निर्णय लिया गया है।

इनको भी मिला है पुरस्कार

जिन अन्य पुलिस कर्मचारियों को 50 हजार रुपए पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे, उन्हें वेतन या पेंशन के साथ दिए जाएंगे। उनमें राजेंद्र बागरी रिटायर्ड निरीक्षक, प्रीति पाटिल सब इंस्पेक्टर बैतूल, संतोष रघुवंशी उप निरीक्षक क्राइम ब्रांच भोपाल, संजय सूर्यवंशी कार्यवाहक निरीक्षक कार्यवाहक उपनिरीक्षक नरसिंहपुर, महेंद्र सिंह राजपूत एएसआई राज्य साइबर सेल पुलिस मुख्यालय, पी चिन्ना राव कार्यवाहक एएसआई साइबर क्राइम भोपाल, दीपेश कुमार पटेल कार्यवाहक एसआई सतना, राजेश शर्मा कार्यवाहक एएसआई नरसिंहपुर, ऋषिकेश राय कार्यवाहक प्रधान आरक्षक भोपाल, राजेश कुमार सेन कार्यवाहक प्रधान आरक्षक भोपाल, अनुराग कौरव कार्यवाहक प्रधान आरक्षक नरसिंहपुर, राजेन्द्र पटेल कार्यवाहक प्रधान आरक्षक नरसिंहपुर, नीरज रैकवार कार्यवाहक प्रधान आरक्षक पन्ना, प्रदीप यादव कार्यवाहक प्रधान आरक्षक सागर शामिल हैं।

पी.के. गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल रीवा के सांदीपनि विद्यालय में उन्नयन के कार्यों को प्राथमिकता से करें पूर्ण: उप मुख्यमंत्री

रीवा के शैक्षणिक संस्थानों के उन्नयन कार्यों की समीक्षा की

भोपाल(नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में रीवा जिले में सांदीपनि विद्यालय और अन्य विद्यालयों के उन्नयन एवं निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने पी.के. गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल, रीवा को सांदीपनि विद्यालय के रूप में विकसित किए जाने के लिए किए जा रहे कार्यों की विशेष चर्चा की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि ऑडिटोरियम, खेल सुविधाएँ, फर्नीचर और अन्य निर्माण कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए जाएं। जिससे आगामी शैक्षणिक सत्र से सेवाओं का संचालन सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि किसी भी प्रकार की तकनीकी अड़चनों को त्वरित रूप से उच्चाधिकारियों के संज्ञान में लाकर प्राथमिकता के आधार पर निराकृत किया जाए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने रीवा शहर के समीपवर्ती क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों के प्रस्तावित उन्नयन कार्यों की प्रगति की भी समीक्षा की और निर्देशित किया कि सभी आवश्यक औपचारिकताओं को शीघ्रता से पूर्ण कर प्रस्तावों को सक्षम स्तर पर अनुमोदन के लिए भेजा जाए। उन्होंने कहा कि रीवा शहर से लगे ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों के उन्नयन को प्राथमिकता से किया जाये, जिससे इन क्षेत्रों के विद्यार्थियों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें और उन्हें शिक्षा के लिये शहर आने की असुविधा न हो। आयुक्त, स्कूल शिक्षा श्रीमती शिल्पा गुप्ता, पीआईयू, एवं एप्को के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

बिजली कंपनी की भर्ती परीक्षा में प्रोविजनल सूची में चयनित आवेदकों के दस्तावेज सत्यापन 23 से 25 जून तक

लाईन परिचारक की शारीरिक दक्षता परीक्षण 26 जून को

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश शासन ऊर्जा विभाग के अधीन 6 बिजली कंपनियों में विभिन्न खाली पदों की पूर्ति के लिये परीक्षा के परिणाम घोषित होने के बाद मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी भोपाल द्वारा तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी पदों के अंतर्गत कनिष्ठ अभियंता (विद्युत), कनिष्ठ अभियंता (सिविल), विधि सहायक, कार्यालय सहायक श्रेणी-तीन एवं लाइन परिचारक के पदों को भरने के लिए दस्तावेज सत्यापन हेतु प्रोविजनल सूची जारी कर दी गयी है। कंपनी द्वारा इन तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी पदों की पूर्ति के लिये कुल 546 सफल आवेदकों की प्रोविजनल सूची जारी कर दस्तावेज सत्यापन के लिये सूचना जारी की गई है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने बताया है कि कंपनी द्वारा प्रोविजनल सूची में शॉर्टलिस्ट आवेदकों में कनिष्ठ अभियंता (विद्युत) के 63, कनिष्ठ अभियंता (सिविल) के 5, विधि सहायक के 21 एवं कार्यालय सहायक श्रेणी-तीन के 309 आवेदकों को 23 जून से 25 जून तक अलग-अलग तारीखों में दस्तावेज सत्यापन के साथ ही लाइन परिचारक के 148 आवेदकों को 26 जून को शारीरिक दक्षता परीक्षण के लिये व्यक्तिगत सूचना जारी की गई है। कंपनी द्वारा आवेदकों के दस्तावेज सत्यापन मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के गोविन्दपुरा मुख्यालय स्थित पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन ट्रेनिंग सेन्टर में किया जाएगा तथा लाइन परिचारक के दस्तावेज सत्यापन एवं शारीरिक दक्षता परीक्षण कंपनी के शिवपुरी, भोपाल, नर्मदापुरम एवं ग्वालियर स्थित महाप्रबंधक वृत्त कार्यालय में 26 जून को किये जायेंगे। प्रोविजनल सूची में दस्तावेज सत्यापन के लिये चयनित आवेदकों के नाम, सत्यापन तिथि एवं शारीरिक दक्षता परीक्षण की तिथि की जानकारी कंपनी की वेबसाइट portal.mpcz.in पर भी देखी जा सकती है।

छात्र संघ चुनाव नहीं होने पर होगा आंदोलन

अभाविप के प्रांत मंत्री केतन चतुर्वेदी बोले- राष्ट्रीय कार्यकारणी बैठक में चार प्रस्ताव पारित

भोपाल (नप्र)। भोपाल में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा हाल ही में रायपुर में संपन्न हुई राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक को लेकर पत्रकार वार्ता आयोजित की गई। इसमें राष्ट्रीय मंत्री शालिनी वर्मा एवं प्रांत मंत्री केतन चतुर्वेदी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि बैठक में देशभर से आए 478 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जहां पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति और छात्र हित को ध्यान में रखते हुए चार प्रमुख प्रस्ताव पारित हुए।

तीन दिवसीय बैठक में चार महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित- 29 मई को हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की तीन दिवसीय बैठक में चार महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए। इनमें कोचिंग संस्थानों की मनमानी पर रोक, केंद्रीय विश्वविद्यालयों में कुलपति नियुक्ति में विलंब, देश की आंतरिक सुरक्षा और विश्वविद्यालयों में बढ़ती वैचारिक

अस्थिरता के समाधान शामिल हैं। अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री शालिनी वर्मा ने बताया कि बैठक में देशभर से आए 478 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बिरसा मुंडा-रानी अबक्का की जयंती पर देशभर में होंगे कार्यक्रम- इस आयोजन में पर्यावरण संरक्षण का विशेष ध्यान रखा गया। 'जीरो फूड वेस्ट', प्लास्टिक मुक्त परिसर और जैविक अपशिष्ट प्रबंधन जैसी पहल की गई। वहीं निर्णय लिया गया कि भविष्य में भगवान बिरसा मुंडा और रानी अबक्का जयंती समारोह, आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम और यशवंत राव केलकर शताब्दी वर्ष के अंतर्गत विभिन्न योजनों की योजना बनाई गई है।

60 लाख की सदस्यता का आंकड़ा पार- अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री शालिनी वर्मा ने बताया कि संगठन की सदस्यता लगभग 60 लाख के करीब पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि एवीभीपी शिक्षा, पर्यावरण, खेल और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य कर रहा है। प्रांत मंत्री केतन चतुर्वेदी ने मध्यप्रदेश में लंबे समय से बंद छात्र संघ चुनावों को शीघ्र प्रारंभ करने की मांग की।

छात्र संघ चुनाव की मांग पर चेतावनी- मध्यभारत प्रांत के प्रांत मंत्री केतन चतुर्वेदी ने कहा कि एवीबीपी केवल संगठनात्मक विस्तार नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति समर्पित, वैचारिक रूप से सजग युवाओं का निर्माण कर रहा है। उन्होंने और चेतावनी दी कि यदि सरकार ने शीघ्र घोषणा नहीं की, तो चक्काजाम और उग्र आंदोलन करने को बाध्य होगा।

जनगणना-2027 में सहयोग के लिए राष्ट्रीय आह्वान

घोषित जनगणना-2027 कार्यक्रम राष्ट्रीय हित में एक ऐतिहासिक एवं अत्यंत आवश्यक कदम है : बृजमोहन श्रीवास्तव

भोपाल। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता बृजमोहन श्रीवास्तव ने आज कहा कि भारत सरकार द्वारा घोषित जनगणना-2027 कार्यक्रम राष्ट्रीय हित में एक ऐतिहासिक एवं अत्यंत आवश्यक कदम है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 महामारी के कारण लंबे समय से विलंबित जनगणना प्रक्रिया अब नए उत्साह एवं प्रतिबद्धता के साथ शुरू होने जा रही है। उन्होंने यह भी बताया कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अजित पवार एवं राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पटेल ने सभी पार्टी कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों, पदाधिकारियों एवं नागरिकों से इस अभियान में पूर्ण सहयोग करने का आह्वान किया है।

श्री श्रीवास्तव ने इस बात पर जोर दिया कि जनगणना केवल आंकड़ों के संग्रह के बारे में नहीं है; यह हमारी राष्ट्रीय योजना, संसाधनों के उचित वितरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण, रोजगार एवं बुनियादी ढांचे के विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसलिए प्रत्येक भारतीय नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह सही जानकारी उपलब्ध कराए तथा इस राष्ट्रीय प्रक्रिया की सफलता में अपना योगदान दे। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने जनगणना के लिए संदर्भ तिथि 01 मार्च 2027 तथा विशेष हिमालयी एवं सुदूर क्षेत्रों के लिए 01 अक्टूबर 2026 निर्धारित की है।

यह हमारे देश की भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए जनगणना करने का एक प्रयास है। उन्होंने आगे कहा कि जनगणना केवल संख्या की कवायद नहीं है, बल्कि यह एक दस्तावेज भी है जो हमारे राष्ट्रीय चरित्र एवं हमारी विकास यात्रा को दर्शाता है। यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की ओर से श्री बृजमोहन ने सभी नागरिकों से जनगणना कर्मचारियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के सही एवं पूर्ण उत्तर देने की अपील की। इससे यह सुनिश्चित होगा कि प्रत्येक परिवार एवं प्रत्येक व्यक्ति की सही गणना हो तथा कोई भी व्यक्ति किसी भी योजना या सुविधा के लाभ से वंचित न रहे। हमारी पार्टी भारत सरकार एवं जनगणना विभाग के साथ पूर्ण सहयोग करने का हर संभव प्रयास करेगी, क्योंकि हमारा मानना है कि यह राष्ट्रीय प्रक्रिया देश के भविष्य को मजबूत करने की नींव रखेगी।